UP Board Class 12 Hindi General 2026 (Set 302 BK) Question Paper with Solutions

General Instructions

(i) This booklet contains 14 questions, each provided with a complete, step-by-step solution.

(ii) It has multiple-choice questions as well as questions that need a written answer.

(iii) Attempt each question on your own before reviewing the given solution.

1(a). हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने वाले निम्न में से प्रथम विद्वान् हैं

(A) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(B) डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

(C) गार्सा द तासी और शिव सिंह सेंगर

(D) डॉ० नगेन्द्र

Correct Answer: (C) गार्सा द तासी और शिव सिंह सेंगर

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने का पहला प्रयास किसने किया, यह पूछा गया है। यहाँ 'प्रथम' शब्द पर ध्यान देना है।

चरण 2: सही विकल्प:
हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की परम्परा में सबसे पहले फ्रांसीसी विद्वान गार्सा द तासी का नाम आता है। उन्होंने फ्रेंच भाषा में 'इस्त्वार द ला लितरेत्युर एन्दुई ए एन्दुस्तानी' नामक ग्रन्थ लिखा। इसके बाद शिवसिंह सेंगर ने 'शिवसिंह सरोज' लिखा। इसीलिए विकल्प (C) सही है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच:
(A) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल: उनका 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' (1929) बहुत प्रसिद्ध है, पर वह बाद का और वैज्ञानिक ग्रन्थ है।
(B) डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी: उन्होंने 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' और 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल' लिखे, जो बाद के हैं।
(D) डॉ० नगेन्द्र: उन्होंने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' का सम्पादन किया, जो और भी बाद का है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) गार्सा द तासी और शिव सिंह सेंगर है।

1(b). आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की रचना है

(A) 'कादम्बरी'

(B) 'चिन्तामणि'

(C) 'तारापथ'

(D) 'कुटज'

Correct Answer: (B) 'चिन्तामणि'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी के प्रसिद्ध निबन्धकार और आलोचक हैं। उनकी रचना पहचाननी है।

चरण 2: सही विकल्प:
'चिन्तामणि' शुक्ल जी का प्रसिद्ध निबन्ध-संग्रह है। इसमें 'क्रोध', 'करुणा', 'लज्जा और ग्लानि' जैसे मनोविकारों पर निबन्ध हैं। इसलिए सही विकल्प (B) है।

चरण 3: अन्य विकल्प किसके हैं:
(A) 'कादम्बरी': यह संस्कृत के गद्यकार बाणभट्ट की रचना है।
(C) 'तारापथ': यह सुमित्रानन्दन पंत का काव्य-संग्रह है।
(D) 'कुटज': यह हजारीप्रसाद द्विवेदी का निबन्ध-संग्रह है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (B) 'चिन्तामणि' है।

1(c). 'पंचपरमेश्वर' कहानी के लेखक हैं

(A) जयशंकर प्रसाद

(B) यशपाल

(C) मुंशी प्रेमचन्द

(D) अमरकान्त

Correct Answer: (C) मुंशी प्रेमचन्द

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न में 'पंचपरमेश्वर' कहानी के लेखक का नाम पूछा गया है। यह हिन्दी की प्रसिद्ध सामाजिक कहानी है।

चरण 2: सही लेखक की पहचान:
'पंचपरमेश्वर' मुंशी प्रेमचन्द की कहानी है। इसमें जुम्मन शेख और अलगू चौधरी की मित्रता तथा पंच के पद पर बैठकर न्याय करने की कथा है।
कहानी का संदेश है कि पंच के आसन पर बैठा व्यक्ति मित्र या शत्रु नहीं देखता, वह केवल न्याय करता है।

चरण 3: गलत विकल्पों की जाँच:
(A) जयशंकर प्रसाद: ये 'आकाशदीप', 'ममता' जैसी कहानियों और 'कामायनी' के

रचयिता हैं।
(B) यशपाल: 'परदा', 'दुःख' जैसी कहानियाँ इनकी हैं।
(D) अमरकान्त: 'डिप्टी कलेक्टरी', 'जिंदगी और जोंक' इनकी कहानियाँ हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) मुंशी प्रेमचन्द है।

1(d). 'अंधेर-नगरी' किस विधा की रचना है?

(A) उपन्यास

(B) कहानी

(C) आत्मकथा

(D) नाटक

Correct Answer: (D) नाटक

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'अंधेर-नगरी' किस साहित्यिक विधा की रचना है, यह पूछा गया है।

चरण 2: रचना का परिचय:
'अंधेर नगरी' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा लिखा गया छह अंकों का प्रसिद्ध प्रहसन (हास्य-व्यंग्य प्रधान नाटक) है। इसका रचना-काल 1881 ई० माना जाता है।
इसमें 'टके सेर भाजी, टके सेर खाजा' वाले राजा के अन्यायपूर्ण शासन पर व्यंग्य है।
इसका मंचन आज भी होता है।

चरण 3: विकल्पों की जाँच:
(A) उपन्यास: यह गद्य की लंबी कथा-विधा है, अंधेर नगरी उपन्यास नहीं है।
(B) कहानी: यह छोटी कथा-विधा है, जबकि अंधेर नगरी में अंक और दृश्य हैं।
(C) आत्मकथा: इसमें लेखक अपना जीवन स्वयं लिखता है, यहाँ ऐसा नहीं है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (D) नाटक है।

1(e). 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के रचनाकार हैं

(A) धर्मवीर भारती

(B) केदारनाथ सिंह

(C) प्रेमचन्द

(D) 'अज्ञेय'

Correct Answer: (A) धर्मवीर भारती

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'गुनाहों का देवता' उपन्यास किस लेखक ने लिखा, यह पूछा गया है।

चरण 2: सही रचनाकार:
'गुनाहों का देवता' धर्मवीर भारती का प्रसिद्ध उपन्यास है। यह 1949 ई० में प्रकाशित हुआ। इसमें चन्दर और सुधा के पवित्र, भावनात्मक प्रेम की कथा है।
भारती जी 'धर्मयुग' के संपादक भी रहे। 'अंधा युग' (गीतिनाट्य) और 'कनुप्रिया' भी उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

चरण 3: गलत विकल्प:
(B) केदारनाथ सिंह: ये कवि हैं, 'अभी बिल्कुल अभी' और 'बाघ' इनकी रचनाएँ हैं।
(C) प्रेमचन्द: 'गोदान', 'गबन' जैसे उपन्यास इनके हैं।
(D) अज्ञेय: 'शेखर : एक जीवनी', 'नदी के द्वीप' इनके उपन्यास हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (A) धर्मवीर भारती है।

2(a). कबीरदास भक्ति काल की किस शाखा से संबन्धित हैं?

(A) सगुण भक्तिधारा

(B) कृष्णमार्गी शाखा

(C) निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा

(D) मुक्ति काव्य धारा

Correct Answer: (C) निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
भक्तिकाल की चार प्रमुख शाखाओं में से कबीरदास किस शाखा के कवि हैं, यह पूछा गया है।

चरण 2: भक्तिकाल की शाखाएँ:
भक्तिकाल दो धाराओं में बँटा है: निर्गुण और सगुण। निर्गुण में ज्ञानाश्रयी (संत काव्य) और प्रेमाश्रयी (सूफी काव्य) शाखाएँ हैं। सगुण में रामभक्ति और कृष्णभक्ति शाखाएँ हैं।
कबीरदास निराकार ब्रह्म के उपासक थे। उन्होंने ज्ञान, गुरु-महिमा और आडंबर-विरोध पर बल दिया, इसलिए वे निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि हैं।

चरण 3: गलत विकल्प:
(A) सगुण भक्तिधारा: इसमें तुलसी, सूर आदि आते हैं, कबीर नहीं।
(B) कृष्णमार्गी शाखा: सूरदास इसके कवि हैं।
(D) मुक्ति काव्य धारा: भक्तिकाल की ऐसी कोई शाखा नहीं है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा है।

2(b). 'नीरजा' किसकी रचना है?

(A) जयशंकर प्रसाद की

(B) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की

(C) सुश्री महादेवी वर्मा की

(D) रामकुमार वर्मा की

Correct Answer: (C) सुश्री महादेवी वर्मा की

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'नीरजा' काव्य-संग्रह किसने लिखा, यह पूछा गया है।

चरण 2: रचना और रचनाकार:
'नीरजा' (1934 ई०) छायावाद की प्रमुख कवयित्री महादेवी वर्मा का गीत-संग्रह है।
इसमें वेदना, करुणा और रहस्यवादी भावों के गीत हैं।
महादेवी वर्मा की अन्य काव्य-रचनाएँ हैं: नीहार, रश्मि, सान्ध्यगीत, दीपशिखा और यामा।

चरण 3: गलत विकल्प:
(A) जयशंकर प्रसाद: 'कामायनी', 'आँसू', 'लहर' इनकी रचनाएँ हैं।
(B) निराला: 'परिमल', 'अनामिका', 'गीतिका' इनकी हैं।
(D) रामकुमार वर्मा: ये एकांकीकार हैं, 'चित्तौड़ की चिता' और 'दीपदान' इनकी रचनाएँ हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) सुश्री महादेवी वर्मा की है।

2(c). 'रीतिकाल' को किस विद्वान् ने 'कलाकाल' कहा है?

(A) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

(B) डॉ० नगेन्द्र

(C) डॉ० रामशंकर शुक्ल 'रसाल'

(D) मिश्रबंधु

Correct Answer: (C) डॉ० रामशंकर शुक्ल 'रसाल'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
रीतिकाल के अलग-अलग विद्वानों ने अलग नाम दिए हैं। यहाँ 'कलाकाल' नाम देने वाले विद्वान् को पहचानना है।

चरण 2: नामकरण का स्मरण:
रीतिकाल के नामकरण इस प्रकार हैं:
मिश्रबंधु: अलंकृत काल
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तथा डॉ० नगेन्द्र: रीतिकाल
विश्वनाथ प्रसाद मिश्र: शृंगार काल
डॉ० रामशंकर शुक्ल 'रसाल': कलाकाल
क्योंकि इस काल में काव्य-कला, अलंकार और चमत्कार पर अधिक बल था, इसलिए रसाल जी ने इसे कलाकाल कहा।

चरण 3: विकल्पों की जाँच:
(A) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इसे शृंगार काल कहा। (B) डॉ० नगेन्द्र ने रीतिकाल नाम ही अपनाया। (D) मिश्रबंधुओं ने अलंकृत काल कहा।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) डॉ० रामशंकर शुक्ल 'रसाल' है।

2(d). 'परिमल' के रचनाकार हैं

(A) जयशंकर प्रसाद

(B) गजानन माधव मुक्तिबोध

(C) 'अज्ञेय'

(D) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

Correct Answer: (D) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'परिमल' काव्य-संग्रह के रचनाकार का नाम पूछा गया है।

चरण 2: रचना और रचनाकार:
'परिमल' (1930 ई०) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का प्रसिद्ध काव्य-संग्रह है। इसमें छायावादी कविताएँ तथा मुक्त छन्द की रचनाएँ हैं।
निराला की अन्य रचनाएँ हैं: अनामिका, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा और नए पत्ते।

चरण 3: गलत विकल्प:
(A) जयशंकर प्रसाद: कामायनी, आँसू, लहर।
(B) मुक्तिबोध: चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी भूरी खाक धूल।
(C) अज्ञेय: हरी घास पर क्षण भर, आँगन के पार द्वार।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (D) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' है।

2(e). 'ग्राम्या' किसकी रचना है?

(A) महादेवी वर्मा की

(B) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की

(C) सुमित्रानंदन पंत की

(D) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की

Correct Answer: (C) सुमित्रानंदन पंत की

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'ग्राम्या' किस कवि की रचना है, यह पूछा गया है।

चरण 2: रचना और रचनाकार:
'ग्राम्या' (1940 ई०) सुमित्रानंदन पंत का काव्य-संग्रह है। इसमें ग्रामीण जीवन, किसानों की दशा और सामाजिक यथार्थ की कविताएँ हैं। यह उनकी प्रगतिवादी चेतना का प्रतिनिधि संग्रह माना जाता है।
पंत की अन्य रचनाएँ हैं: वीणा, पल्लव, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, स्वर्णकिरण और चिदम्बरा।

चरण 3: गलत विकल्प:
(A) महादेवी वर्मा: नीहार, नीरजा, दीपशिखा।
(B) निराला: परिमल, अनामिका, गीतिका।
(D) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र: प्रेम-माधुरी, भारत-दुर्दशा, अंधेर नगरी।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) सुमित्रानंदन पंत की है।

3(i). *गद्यांश:* पृथ्वी और आकाश के अंतराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गंभीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोये हुए के समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का ठाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह, और अथक परिश्रम द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए। हमारा यह ध्येय हो कि राष्ट्र में जितने हाथ हैं, उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिये बिना रीता न रहे।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: संदर्भ:
प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'हिन्दी गद्य' के निबन्ध 'राष्ट्र का स्वरूप' से लिया गया है। इसके लेखक प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता और निबन्धकार डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल हैं।

चरण 2: अंश की विषय-वस्तु:
इस निबन्ध में लेखक ने भूमि, जन और संस्कृति को राष्ट्र के तीन आधार बताया है। इस अंश में वे ज्ञान-विज्ञान और परिश्रम से राष्ट्र का भौतिक विकास करने की प्रेरणा देते हैं।

निष्कर्ष:
संदर्भ: पाठ 'राष्ट्र का स्वरूप', लेखक वासुदेवशरण अग्रवाल।

3(ii). *गद्यांश:* पृथ्वी और आकाश के अंतराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गंभीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोये हुए के समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का ठाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह, और अथक परिश्रम द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए। हमारा यह ध्येय हो कि राष्ट्र में जितने हाथ हैं, उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिये बिना रीता न रहे।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रसंग:
यहाँ लेखक राष्ट्र के भौतिक स्वरूप के निर्माण की चर्चा कर रहे हैं। वे कहते हैं कि राष्ट्र की उन्नति के लिए ज्ञान और कर्म का मेल आवश्यक है।

चरण 2: शब्दार्थ:
उद्यम = प्रयत्न, कर्म। भौतिक स्वरूप = सांसारिक, बाहरी रूप (धन, साधन, सुविधाएँ)। ठाट खड़ा करना = ढाँचा तैयार करना। अथक = जो थके नहीं। नित्य = प्रतिदिन।

चरण 3: व्याख्या:
लेखक का कहना है कि केवल विज्ञान से या केवल परिश्रम से राष्ट्र आगे नहीं बढ़ता। दोनों को साथ लेने पर ही राष्ट्र के साधन, उद्योग, कृषि और सुख-सुविधाओं का मजबूत ढाँचा बनता है। यह निर्माण एक दिन का काम नहीं है। इसे प्रसन्न मन, उमंग और बिना थके मेहनत से रोज़ आगे बढ़ाना होगा। निराशा या आलस्य से यह काम नहीं हो सकता।

चरण 4: टिप्पणी:
भाषा सरल है, तत्सम शब्दों का प्रयोग है और भाव प्रेरणा देने वाला है।

निष्कर्ष:
राष्ट्र की भौतिक प्रगति विज्ञान, उद्यम, उत्साह और सतत परिश्रम के मेल से ही सम्भव है।

3(iii). *गद्यांश:* पृथ्वी और आकाश के अंतराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गंभीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोये हुए के समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का ठाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह, और अथक परिश्रम द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए। हमारा यह ध्येय हो कि राष्ट्र में जितने हाथ हैं, उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिये बिना रीता न रहे।

(iii) राष्ट्रीय चेतना में भौतिक ज्ञान-विज्ञान के महत्त्व को रेखांकित कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: गद्यांश के आधार पर:
लेखक के अनुसार पृथ्वी, आकाश और सागर में जो सामग्री और रत्न भरे हैं, उन्हें जानना और काम में लाना राष्ट्र के लिए आवश्यक है। यह काम ज्ञान-विज्ञान से ही सम्भव है।

चरण 2: महत्त्व के बिन्दु:
1. विज्ञान से प्रकृति की छिपी सम्पदा का ज्ञान होता है।
2. विज्ञान और उद्यम मिलकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का ढाँचा खड़ा करते हैं।
3. नवयुवकों में जिज्ञासा जगने से राष्ट्र की सुप्त चेतना जागती है।

निष्कर्ष:
भौतिक ज्ञान-विज्ञान राष्ट्रीय चेतना को जगाकर राष्ट्र को समृद्ध और सशक्त बनाता है।

3(iv). *गद्यांश:* पृथ्वी और आकाश के अंतराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गंभीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोये हुए के समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का ठाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह, और अथक परिश्रम द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए। हमारा यह ध्येय हो कि राष्ट्र में जितने हाथ हैं, उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिये बिना रीता न रहे।

(iv) लेखक ने राष्ट्र की सुप्त अवस्था कब तक स्वीकार की है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश से उत्तर:
लेखक ने कहा है कि पृथ्वी, आकाश और सागर की सम्पदा के प्रति जब तक राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में जिज्ञासा की नयी किरणें नहीं फूटतीं, तब तक हम सोये हुए के समान हैं।

अंतिम उत्तर:
लेखक ने राष्ट्र की सुप्त अवस्था तब तक स्वीकार की है, जब तक नवयुवकों में जिज्ञासा की नयी किरणें नहीं जागतीं।

3(v). *गद्यांश:* पृथ्वी और आकाश के अंतराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गंभीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नयी किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोये हुए के समान हैं। विज्ञान और उद्यम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का ठाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह, और अथक परिश्रम द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए। हमारा यह ध्येय हो कि राष्ट्र में जितने हाथ हैं, उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिये बिना रीता न रहे।

(v) विज्ञान और श्रम के संयोग से राष्ट्र प्रगति के पथ पर कैसे अग्रसर हो सकता है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश का कथन:
लेखक के अनुसार विज्ञान और उद्यम को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का ठाट खड़ा करना है।

चरण 2: प्रगति का मार्ग:
विज्ञान से राष्ट्र को अपनी भूमि, सागर और आकाश की सम्पदा का ज्ञान मिलता है। श्रम से वह ज्ञान काम में बदलता है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अथक परिश्रम से रोज़ आगे बढ़ना चाहिए। जब राष्ट्र का हर हाथ इस कार्य में लगेगा, तब कोई खाली नहीं रहेगा।

निष्कर्ष:
विज्ञान की जानकारी और सबके सामूहिक श्रम से राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

OR

3(i). *गद्यांश:* न्यूनतम में गुजारा करने और जीवन बिताने में भी कोई हर्ज नहीं है। महात्मा गाँधी ने ऐसा ही जीवन जिया था, लेकिन जैसा कि उनके साथ था, आपके मामले में भी यह आपकी पसंद पर निर्भर करता है। आपकी ऐसी जीवन-शैली इसलिये है क्योंकि इससे वे तमाम जरूरतें पूरी होती हैं जो आपके भीतर की गहराइयों से उपजी होती हैं। लेकिन त्याग की प्रतिमूर्ति बनना और जोर-जबरदस्ती से चुनना-सहने का गुणगान करना अलग बातें हैं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: पाठ की पहचान:
यह गद्यांश उत्तर प्रदेश बोर्ड की कक्षा 12 की साहित्यिक हिन्दी (गद्य खण्ड) के पाठ 'हम और हमारा आदर्श' से लिया गया है।

चरण 2: लेखक का नाम:
इस पाठ के लेखक डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम हैं।
इसमें उन्होंने राष्ट्र की आत्मविश्वास-भरी प्रगति और भौतिक समृद्धि के साथ आध्यात्मिकता के संतुलन पर विचार रखे हैं।

अंतिम उत्तर:
पाठ: हम और हमारा आदर्श। लेखक: ए. पी. जे. अब्दुल कलाम।

3(ii). *गद्यांश:* न्यूनतम में गुजारा करने और जीवन बिताने में भी कोई हर्ज नहीं है। महात्मा गाँधी ने ऐसा ही जीवन जिया था, लेकिन जैसा कि उनके साथ था, आपके मामले में भी यह आपकी पसंद पर निर्भर करता है। आपकी ऐसी जीवन-शैली इसलिये है क्योंकि इससे वे तमाम जरूरतें पूरी होती हैं जो आपके भीतर की गहराइयों से उपजी होती हैं। लेकिन त्याग की प्रतिमूर्ति बनना और जोर-जबरदस्ती से चुनना-सहने का गुणगान करना अलग बातें हैं।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के पाठ 'हम और हमारा आदर्श' से लिया गया है। इसके लेखक डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम हैं। इसमें लेखक कम साधनों में जीवन बिताने और उसके पीछे की सही भावना की बात कर रहे हैं।

चरण 2: प्रसंग:
लेखक बताते हैं कि साधारण जीवन जीना बुरा नहीं है, पर यह व्यक्ति की अपनी इच्छा से होना चाहिए, किसी दबाव से नहीं।

चरण 3: शब्दार्थ:
न्यूनतम: सबसे कम। गुजारा: निर्वाह। हर्ज: हानि, आपत्ति।

चरण 4: व्याख्या:

रेखांकित पंक्ति का अर्थ है कि बहुत थोड़े साधनों में निर्वाह करना और उसी में जीवन बिता देना कोई बुरी बात नहीं है। इसमें कोई हानि या दोष नहीं है, क्योंकि आवश्यकताएँ कम रखने से मन शांत रहता है। लेखक अगले वाक्य में महात्मा गाँधी का उदाहरण देते हैं, जिन्होंने सादा जीवन अपनी पसंद से अपनाया था। भाव यह है कि सादगी सम्मान की चीज़ है, बशर्ते वह स्वेच्छा से चुनी गई हो।

निष्कर्ष:
सादा जीवन अपनी इच्छा से अपनाया जाए तो वह श्रेष्ठ है।

3(iii). *गद्यांश:* न्यूनतम में गुजारा करने और जीवन बिताने में भी कोई हर्ज नहीं है। महात्मा गाँधी ने ऐसा ही जीवन जिया था, लेकिन जैसा कि उनके साथ था, आपके मामले में भी यह आपकी पसंद पर निर्भर करता है। आपकी ऐसी जीवन-शैली इसलिये है क्योंकि इससे वे तमाम जरूरतें पूरी होती हैं जो आपके भीतर की गहराइयों से उपजी होती हैं। लेकिन त्याग की प्रतिमूर्ति बनना और जोर-जबरदस्ती से चुनना-सहने का गुणगान करना अलग बातें हैं।

(iii) मनुष्य को सदैव किस प्रकार की जीवन शैली अपनानी चाहिए?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न पूछता है कि मनुष्य को कैसी जीवन-शैली अपनानी चाहिए। उत्तर गद्यांश के भाव से लेना है।

चरण 2: गद्यांश के अनुसार उत्तर:
मनुष्य को ऐसी जीवन-शैली अपनानी चाहिए, जो उसकी अपनी पसंद हो और उसकी भीतर की सच्ची आवश्यकताओं को पूरा करे।
वह जीवन दूसरों को दिखाने या जोर-जबरदस्ती के कारण नहीं, अपनी इच्छा और संतोष से चुना जाना चाहिए।

अंतिम उत्तर:

मनुष्य को स्वेच्छा से चुनी हुई, अपनी आंतरिक जरूरतों के अनुरूप जीवन-शैली अपनानी चाहिए।

3(iv). *गद्यांश:* न्यूनतम में गुजारा करने और जीवन बिताने में भी कोई हर्ज नहीं है। महात्मा गाँधी ने ऐसा ही जीवन जिया था, लेकिन जैसा कि उनके साथ था, आपके मामले में भी यह आपकी पसंद पर निर्भर करता है। आपकी ऐसी जीवन-शैली इसलिये है क्योंकि इससे वे तमाम जरूरतें पूरी होती हैं जो आपके भीतर की गहराइयों से उपजी होती हैं। लेकिन त्याग की प्रतिमूर्ति बनना और जोर-जबरदस्ती से चुनना-सहने का गुणगान करना अलग बातें हैं।

(iv) लेखक के अनुसार किस प्रकार का जीवन व्यतीत करने में परेशानी नहीं है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: गद्यांश में खोजें:
गद्यांश की पहली पंक्ति कहती है कि न्यूनतम में गुजारा करने और जीवन बिताने में भी कोई हर्ज नहीं है।

चरण 2: उत्तर:
लेखक के अनुसार कम से कम साधनों में गुजारा करते हुए जीवन बिताने में कोई परेशानी नहीं है, यदि वह व्यक्ति की अपनी पसंद हो। महात्मा गाँधी ने ऐसा ही जीवन जिया था।

अंतिम उत्तर:
न्यूनतम आवश्यकताओं में सादा जीवन बिताने में कोई परेशानी नहीं है।

3(v). *गद्यांश:* न्यूनतम में गुजारा करने और जीवन बिताने में भी कोई हर्ज नहीं है। महात्मा गाँधी ने ऐसा ही जीवन जिया था, लेकिन जैसा कि उनके साथ था, आपके मामले में भी यह आपकी पसंद पर निर्भर करता है। आपकी ऐसी जीवन-शैली इसलिये है क्योंकि इससे वे तमाम जरूरतें पूरी होती हैं जो आपके भीतर की गहराइयों से उपजी होती हैं। लेकिन त्याग की प्रतिमूर्ति बनना और जोर-जबरदस्ती से चुनना-सहने का गुणगान करना अलग बातें हैं।

(v) लेखक किसे एक दूसरे का विरोधी नहीं मानते हैं?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: स्रोत की बात:
यह प्रश्न पाठ 'हम और हमारा आदर्श' के विचार से जुड़ा है। दिया गया अंश पूरे पाठ का एक भाग है। इसी पाठ में डॉ. कलाम अपनी मान्यता स्पष्ट करते हैं।

चरण 2: उत्तर:
लेखक भौतिक समृद्धि और आध्यात्मिकता को एक-दूसरे का विरोधी नहीं मानते। वे कहते हैं कि सादगी का चुनाव अपनी पसंद से होना चाहिए, पर धन-सम्पत्ति और अध्यात्म साथ-साथ चल सकते हैं।

अंतिम उत्तर:
लेखक समृद्धि (भौतिक सुख-साधन) और आध्यात्मिकता को एक-दूसरे का विरोधी नहीं मानते।

4(i). *पद्यांश:* कोई प्यारा कुसुम कुम्हला गेह में जो पड़ा हो
तो प्यारे के चरण पर ला डाल देना उसी को
यों देना ऐ पवन बतला फूल सी एक बाला
म्लान हो हो कमल-पग को चूमना चाहती है।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'सामान्य हिन्दी' के काव्य-खण्ड में संकलित 'पवन-दूतिका' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता खड़ीबोली के प्रसिद्ध

कवि अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' हैं।

चरण 2: स्रोत का परिचय:
यह अंश हरिऔध जी के महाकाव्य 'प्रिय प्रवास' के छठे सर्ग से लिया गया है, जो मन्दाक्रान्ता छन्द में रचा गया है।

अंतिम उत्तर:
सन्दर्भ: पाठ 'पवन-दूतिका', कवि अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', ग्रन्थ 'प्रिय प्रवास'।

4(ii). *पद्यांश:* कोई प्यारा कुसुम कुम्हला गेह में जो पड़ा हो
तो प्यारे के चरण पर ला डाल देना उसी को
यों देना ऐ पवन बतला फूल सी एक बाला
म्लान हो हो कमल-पग को चूमना चाहती है।

(ii) प्रस्तुत पद्यांश में राधा ने अपनी तुलना किससे की है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: पद्यांश के आधार पर उत्तर:
पद्यांश में राधा पवन से कहती हैं कि यदि घर में कोई प्यारा फूल मुरझाया हुआ पड़ा मिले, तो उसे कृष्ण के चरणों पर डाल देना।
इसके बाद वे कहती हैं कि फूल के समान एक कोमल बाला मुरझाकर उनके कमल जैसे चरण चूमना चाहती है।

चरण 2: तुलना:
यहाँ राधा ने अपनी तुलना कृष्ण-वियोग में मुरझाए हुए कोमल फूल से की है।

अंतिम उत्तर:
राधा ने अपनी तुलना मुरझाए हुए फूल से की है।

4(iii). *पद्यांश:* कोई प्यारा कुसुम कुम्हला गेह में जो पड़ा हो
तो प्यारे के चरण पर ला डाल देना उसी को
यों देना ऐ पवन बतला फूल सी एक बाला
म्लान हो हो कमल-पग को चूमना चाहती है।

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रसंग:
कृष्ण मथुरा चले गए हैं और राधा उनके वियोग में व्याकुल हैं। वे पवन को दूती बनाकर मथुरा भेजती हैं और अपने मन की दशा कृष्ण तक पहुँचाने को कहती हैं। ये पंक्तियाँ उसी सन्देश का अंश हैं।

चरण 2: शब्दार्थ:
कुसुम = फूल। कुम्हला = मुरझाकर। गेह = घर। म्लान = मलिन, कुम्हलाई हुई। कमल-पग = कमल जैसे चरण।

चरण 3: व्याख्या:
राधा पवन से कहती हैं कि हे पवन, यदि तुम्हें घर में कोई प्यारा फूल मुरझाया हुआ पड़ा मिले, तो उसे उठाकर कृष्ण के चरणों पर डाल देना। फिर उनसे कहना कि फूल के समान एक कोमल बाला वियोग में कुम्हलाकर आपके कमल जैसे चरणों को चूमना चाहती है।
यहाँ राधा मुरझाए फूल के बहाने अपनी दशा बता रही हैं। जैसे फूल धीरे-धीरे सूख जाता है, वैसे ही वे भी विरह में क्षीण हो रही हैं।

चरण 4: विशेष:
इन पंक्तियों में राधा का विनम्र और समर्पित प्रेम झलकता है। भाषा सरल खड़ीबोली है और छन्द मन्दाक्रान्ता है। 'कमल-पग' में रूपक तथा 'फूल सी बाला' में उपमा अलंकार है।

4(iv). *पद्यांश:* कोई प्यारा कुसुम कुम्हला गेह में जो पड़ा हो
तो प्यारे के चरण पर ला डाल देना उसी को
यों देना ऐ पवन बतला फूल सी एक बाला
म्लान हो हो कमल-पग को चूमना चाहती है।

(iv) श्रीकृष्ण के कमलवत चरणों को कौन चूमना चाहता है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: पद्यांश में संकेत:
अन्तिम पंक्ति में लिखा है कि फूल के समान एक बाला कमल जैसे चरणों को चूमना चाहती है।

चरण 2: पहचान:
यह बाला स्वयं राधा हैं। वे पवन के माध्यम से कृष्ण को अपनी इच्छा और विरह की दशा बता रही हैं।

अंतिम उत्तर:
श्रीकृष्ण के कमल जैसे चरणों को फूल के समान कोमल बाला, अर्थात राधा, चूमना चाहती हैं।

4(v). *पद्यांश:* कोई प्यारा कुसुम कुम्हला गेह में जो पड़ा हो
तो प्यारे के चरण पर ला डाल देना उसी को
यों देना ऐ पवन बतला फूल सी एक बाला
म्लान हो हो कमल-पग को चूमना चाहती है।

(v) राधा पवन-दूतिका से मुरझाए हुए पुष्प के माध्यम से क्या संदेश देना चाहती है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रसंग:
कृष्ण के वियोग में राधा बहुत दुखी हैं। वे पवन को दूती बनाकर मथुरा भेजती हैं और अपनी दशा कृष्ण तक पहुँचाना चाहती हैं।

चरण 2: राधा का सन्देश:
राधा पवन से कहती हैं कि यदि घर में कोई मुरझाया फूल पड़ा मिले, तो उसे कृष्ण के चरणों पर डाल देना। इस मुरझाए फूल के द्वारा वे यह बताना चाहती हैं कि उन्हीं की तरह एक कोमल बाला विरह में कुम्हला गई है। वह आपके कमल जैसे चरणों को चूमना, अर्थात आपके दर्शन और सान्निध्य को पाना चाहती है।

निष्कर्ष:
राधा मुरझाए फूल के माध्यम से अपनी विरह-व्यथा और कृष्ण से मिलने की तीव्र इच्छा का सन्देश भेजना चाहती हैं।

OR

4(i). *पद्यांश:* मैं नीर भरी दुःख की बदली।
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा
क्रंदन में आहत विश्व हँसा
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के काव्य-खण्ड की कविता 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' से लिया गया है। इसकी रचयिता छायावाद की प्रमुख कवयित्री महादेवी वर्मा हैं। यह गीत उनके काव्य-संग्रह 'सांध्यगीत' में संकलित है।

चरण 2: प्रसंग:
इन पंक्तियों में कवयित्री ने अपने जीवन की तुलना जल से भरी बदली से की है। वे बताती हैं कि उनके भीतर पीड़ा भरी है, फिर भी वह दूसरों के लिए सुख और करुणा का कारण बनती है।

निष्कर्ष:
सन्दर्भ: पाठ 'मैं नीर भरी दुःख की बदली', कवयित्री महादेवी वर्मा, संग्रह 'सांध्यगीत'।

4(ii). *पद्यांश:* मैं नीर भरी दुःख की बदली।
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा
क्रंदन में आहत विश्व हँसा
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: शब्दार्थ:
नीर = जल; बदली = छोटा बादल; स्पंदन = धड़कन, हलचल; चिर = सदा, बहुत समय से; निस्पंद = स्थिर, गतिहीन।

चरण 2: व्याख्या:
कवयित्री कहती हैं कि मैं जल से भरी हुई दुःख की बदली हूँ। जैसे बदली में पानी भरा रहता है, वैसे ही मेरे हृदय में पीड़ा भरी है। मेरे हृदय की हर धड़कन में सदा से एक ठहरी हुई, शांत वेदना बसी हुई है। बाहर से मैं हलचल में दिखती हूँ, पर भीतर स्थायी पीड़ा है। वही पीड़ा मेरे जीवन का आधार बन गई है। यहाँ विरोध का सुंदर भाव है, क्योंकि स्पंदन में निस्पंदता का बसना विरोधाभास है।

चरण 3: काव्य-सौन्दर्य:
भाषा खड़ी बोली है, जिसमें तत्सम शब्दों की प्रधानता है। 'नीर भरी दुःख की बदली' में

रूपक अलंकार है। स्पंदन और निस्पंद के प्रयोग से विरोधाभास बना है। शैली गीतात्मक और भावपूर्ण है।

4(iii). *पद्यांश:* मैं नीर भरी दुःख की बदली।
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा
क्रंदन में आहत विश्व हँसा
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली।

(iii) 'नयनों में दीपक से जलते' में कौन सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: अलंकार की पहचान:
'नयनों में दीपक से जलते' में उपमा अलंकार है।

चरण 2: कारण:
जब दो भिन्न वस्तुओं में समान गुण के कारण तुलना की जाती है और वाचक शब्द रहता है, तब उपमा होती है। यहाँ नयन (उपमेय) की तुलना दीपक (उपमान) से की गई है। 'से' वाचक शब्द है, जलना समान धर्म है। नेत्रों में पीड़ा की लौ जल रही है, इसलिए वे दीपक जैसे कहे गए हैं।

अंतिम उत्तर:
उपमा अलंकार।

4(iv). *पद्यांश:* मैं नीर भरी दुःख की बदली।
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा
क्रंदन में आहत विश्व हँसा
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली।

(iv) कवयित्री के निरंतर रुदन का क्या कारण है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: पद्यांश के आधार पर कारण:
कवयित्री के हृदय में वेदना सदा बसी रहती है। उनके जीवन में प्रिय से वियोग की पीड़ा और दुःख भरा है। यही पीड़ा आँसू बनकर आँखों से निरंतर बहती रहती है।

चरण 2: पंक्तियों से प्रमाण:
'स्पंदन में चिर निस्पंद बसा' बताता है कि हर धड़कन में स्थायी पीड़ा है। 'पलकों में निर्झरिणी मचली' बताता है कि पलकों में आँसुओं का झरना उमड़ रहा है।

निष्कर्ष:
निरंतर रुदन का कारण उनके हृदय में बसी गहरी विरह-वेदना है।

4(v). *पद्यांश:* मैं नीर भरी दुःख की बदली।
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा
क्रंदन में आहत विश्व हँसा
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली।

(v) उपर्युक्त पद्यांश में कवयित्री ने स्वयं को क्या बताया है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: उत्तर:
कवयित्री ने स्वयं को 'नीर भरी दुःख की बदली' बताया है।

चरण 2: अर्थ:
बदली जल से भरी होती है और वर्षा करके दूसरों को शीतलता देती है। इसी प्रकार

कवयित्री का जीवन वेदना और आँसुओं से भरा है, फिर भी उनकी पीड़ा संसार के लिए करुणा और सुख का कारण बनती है।

निष्कर्ष:
कवयित्री ने अपने को दुःख से भरी हुई बदली कहा है।

5(a). निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **हरिशंकर परसाई**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: 80 शब्दों में साहित्यिक परिचय:
हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त सन् 1924 ई० को होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) के जमानी गाँव में हुआ। इन्होंने अध्यापन छोड़कर स्वतन्त्र लेखन अपनाया और 'वसुधा' पत्रिका निकाली। समाज और राजनीति की विसंगतियों, पाखण्ड तथा भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य इनकी विशेषता है। भाषा सरल, बोलचाल की तथा शैली व्यंग्यात्मक है। प्रमुख रचनाएँ: हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे, भोलाराम का जीव, विकलांग श्रद्धा का दौर, रानी नागफनी की कहानी।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. इनका निधन 10 अगस्त सन् 1995 ई० को जबलपुर में हुआ।
2. 'विकलांग श्रद्धा का दौर' पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
3. इन्हें हिन्दी का श्रेष्ठ व्यंग्यकार माना जाता है।
4. अन्य कृतियाँ: वैष्णव की फिसलन, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, सदाचार का ताबीज, तब की बात और थी, तट की खोज।

निष्कर्ष:
परसाई जी ने व्यंग्य को हँसी से आगे बढ़ाकर समाज सुधार का साधन बनाया।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: 80 शब्दों में साहित्यिक परिचय:
कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म 29 मई सन् 1906 ई० को देवबन्द (सहारनपुर, उत्तर प्रदेश) में हुआ। ये स्वतन्त्रता सेनानी और पत्रकार भी थे तथा 'ज्ञानोदय' पत्रिका का सम्पादन किया। लघुकथा, संस्मरण, रेखाचित्र और ललित निबन्ध इनकी प्रिय विधाएँ हैं। भाषा सरल और भावपूर्ण तथा शैली मार्मिक है।
प्रमुख रचनाएँ: ज़िन्दगी मुस्कराई, बाजे पायलिया के घुँघरू, दीप जले शंख बजे, माटी हो गई सोना, आकाश के तारे धरती के फूल।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. इनका निधन 9 मई सन् 1995 ई० को हुआ।
2. इन्होंने 'नया जीवन' और 'विकास' जैसे पत्र भी निकाले।
3. इनकी रचनाओं में मानवीय संवेदना, सेवा-भाव और नैतिक मूल्यों पर बल मिलता है।
4. अन्य कृतियाँ: महके आँगन चहके द्वार, नई पीढ़ी नए विचार, क्षण बोले कण मुसकाए।

निष्कर्ष:
प्रभाकर जी हिन्दी के सफल निबन्धकार और संस्मरणकार थे, जिन्होंने छोटी-छोटी घटनाओं से जीवन की बड़ी सीख दी।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (अधिकतम 80 शब्द):
डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 ई० को तमिलनाडु के रामेश्वरम् में हुआ। वैज्ञानिक के रूप में वे इसरो और डी०आर०डी०ओ० से जुड़े और 'मिसाइल मैन' कहलाए। सन् 2002 से 2007 तक वे भारत के राष्ट्रपति रहे। उनकी भाषा सरल और प्रेरक तथा शैली आत्मकथात्मक है। 2015 ई० में निधन हुआ।

चरण 2: प्रमुख रचनाएँ:
अग्नि की उड़ान, भारत 2020: नई सहस्राब्दी के लिए एक दृष्टि, मेरे सपनों का भारत, प्रज्वलित मन, अदम्य साहस, मेरी जीवन यात्रा।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. 'अग्नि की उड़ान' उनकी आत्मकथा है, जो अरुण तिवारी के सहलेखन में लिखी गई।
2. उन्हें पद्म भूषण (1981), पद्म विभूषण (1990) और भारत रत्न (1997) मिला।
3. वे युवाओं को सपने देखने और उन्हें साकार करने की प्रेरणा देते थे, इसलिए 'जनता के राष्ट्रपति' कहे गए।

निष्कर्ष:
कलाम विज्ञान और साहित्य दोनों में प्रेरणा देने वाले महान व्यक्तित्व हैं।

5(b). निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: उत्तर (80 शब्दों के भीतर):
अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म सन् 1865 ई. में निजामाबाद (आजमगढ़, उत्तर प्रदेश) में हुआ। ये द्विवेदी युग के प्रमुख कवि थे। इन्होंने खड़ीबोली में पहला महाकाव्य 'प्रियप्रवास' रचा। इनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ है और काव्य में लोकमंगल की भावना मिलती है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अध्यापन किया। सन् 1947 में निधन हुआ।
प्रमुख रचनाएँ: प्रियप्रवास, वैदेही वनवास, चोखे चौपदे, चुभते चौपदे, रसकलश, पारिजात, अधखिला फूल, ठेठ हिन्दी का ठाठ।

चरण 2: अतिरिक्त बिंदु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. 'प्रियप्रवास' में श्रीकृष्ण के मथुरा-गमन के बाद राधा और ब्रजवासियों के विरह का वर्णन है। इसमें राधा को लोकसेविका के रूप में दिखाया गया है।
2. 'वैदेही वनवास' में सीता के वनवास की करुण कथा है।
3. 'चोखे चौपदे' और 'चुभते चौपदे' में बोलचाल की मुहावरेदार भाषा का सुन्दर प्रयोग है।
4. इन्होंने कविता के साथ उपन्यास और आलोचना में भी लिखा।

निष्कर्ष:
हरिऔध जी ने खड़ीबोली को काव्य की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया, इसीलिए इन्हें 'कवि सम्राट' कहा जाता है।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **सुमित्रानंदन पंत**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: उत्तर (80 शब्दों के भीतर):
सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई 1900 ई. को कौसानी (अल्मोड़ा, उत्तराखंड) में हुआ। ये छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में गिने जाते हैं। प्रकृति के सुकुमार कवि के

रूप में प्रसिद्ध हुए। पहले इनके काव्य में प्रकृति-सौन्दर्य मिलता है, फिर मानवतावाद और अरविन्द-दर्शन का प्रभाव आया। 'चिदम्बरा' पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। निधन 1977 ई. में हुआ।
प्रमुख रचनाएँ: वीणा, ग्रन्थि, पल्लव, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, उत्तरा, लोकायतन, चिदम्बरा।

चरण 2: अतिरिक्त बिंदु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. बचपन का नाम गुसाईं दत्त था।
2. इनकी काव्य-यात्रा के तीन चरण माने जाते हैं: छायावादी, प्रगतिवादी और अध्यात्मवादी।
3. 'कला और बूढ़ा चाँद' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
4. भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया।
5. भाषा कोमल, संगीतमय और चित्रात्मक है।

निष्कर्ष:
पंत जी प्रकृति, सौन्दर्य और मानवता के कवि थे।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **महादेवी वर्मा**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: उत्तर (80 शब्दों के भीतर):
महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई. में फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ। ये छायावाद की प्रमुख कवयित्री हैं और आधुनिक मीरा कहलाती हैं। इनके गीतों में वेदना, करुणा, रहस्यवाद और प्रकृति-प्रेम मिलता है। ये प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्य रहीं। 'यामा' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। निधन 1987 ई. में प्रयागराज में हुआ।
प्रमुख रचनाएँ: नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्यगीत, दीपशिखा, यामा; गद्य में अतीत के

चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, श्रृंखला की कड़ियाँ, पथ के साथी।

चरण 2: अतिरिक्त बिंदु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. इन्होंने 'चाँद' पत्रिका का संपादन किया।
2. 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा' और 'सान्ध्यगीत' इन चार काव्य-संग्रहों का संकलन 'यामा' में है।
3. इनका गद्य रेखाचित्र और संस्मरण के लिए प्रसिद्ध है।
4. इन्हें पद्मभूषण और पद्मविभूषण सम्मान मिले।
5. भाषा संस्कृतनिष्ठ, कोमल और भावप्रवण है।

निष्कर्ष:
महादेवी जी का काव्य विरह-वेदना और आध्यात्मिक अनुभूति का सुन्दर संगम है।

6. 'पंचलाइट' अथवा 'ध्रुवयात्रा' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न में दो कहानियों में से एक का उद्देश्य पूछा गया है। यहाँ फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी 'पंचलाइट' का उद्देश्य 80 शब्दों में दिया गया है।

चरण 2: उद्देश्य (अधिकतम 80 शब्द):
रेणु की 'पंचलाइट' का उद्देश्य ग्रामीण समाज की सरलता, जाति-पंचायत की रूढ़ियों और व्यक्ति की प्रतिभा का महत्व दिखाना है। पंचायत ने गोधन को प्रेम और सिनेमा के गीत गाने के कारण बिरादरी से अलग कर रखा था। पेट्रोमेक्स जलाने की जरूरत पड़ी तो वही काम आया। लेखक बताते हैं कि कठोर नियमों से बड़ा सामूहिक हित और व्यक्ति की योग्यता है। कहानी ग्रामीण मनोविज्ञान की सजीव झलक भी देती है।

चरण 3: अतिरिक्त बिंदु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. यह आंचलिक कहानी है और रेणु के संग्रह 'ठुमरी' में संकलित है।
2. महतो टोली ने दण्ड-जुर्माने के पैसे जोड़कर रामनवमी के मेले से पंचलाइट खरीदी थी।
3. दूसरे टोले के सामने हँसी न उड़े, इसी डर से पंचों ने गोधन को क्षमा कर दिया।

निष्कर्ष:
'पंचलाइट' ग्रामीण जीवन की सहजता के साथ यह संदेश देती है कि समाज की भलाई के लिए रूढ़ियाँ छोड़कर योग्य व्यक्ति को सम्मान देना चाहिए।

OR

'बहादुर' अथवा 'लाटी' कहानी का सारांश लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
दो कहानियों में से एक का सारांश लिखना है। यहाँ अमरकान्त की कहानी 'बहादुर' का सारांश दिया गया है।

चरण 2: सारांश (अधिकतम 80 शब्द):
अमरकान्त की 'बहादुर' में नेपाल का बारह-तेरह वर्ष का लड़का बहादुर माँ के दुर्व्यवहार से तंग आकर घर छोड़ता है और एक मध्यवर्गीय परिवार में नौकर बनता है। वह हँसमुख, ईमानदार और परिश्रमी है। शुरू में उसे स्नेह मिलता है, पर धीरे-धीरे परिवार के लोग उसे गाली देने और मारने लगते हैं। चोरी का झूठा आरोप लगने पर आहत बहादुर चुपचाप चला जाता है। बाद में सबको पछतावा होता है।

चरण 3: अतिरिक्त बिंदु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. निर्मला पहले बहादुर का ध्यान रखती है, पर बाद में उसका व्यवहार भी कठोर हो जाता है।
2. निर्मला का बेटा किशोर बात-बात पर बहादुर को पीटता है।

3. बहादुर के जाने के बाद ही घर वालों को उसकी उपयोगिता समझ आती है।

निष्कर्ष:
कहानी बताती है कि मध्यवर्गीय परिवार भी गरीब नौकर का शोषण करते हैं और मानवता की कद्र देर से समझते हैं।

7(a). 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की कथावस्तु लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: परिचय:
'मुक्तियज्ञ' के रचयिता सुमित्रानन्दन पन्त हैं। यह खण्डकाव्य उनके महाकाव्य 'लोकायतन' का एक अंश है। इसके नायक महात्मा गाँधी हैं और कथा सन् 1921 से 1947 तक के स्वतन्त्रता-संग्राम पर आधारित है।

चरण 2: कथासार:
कथा साबरमती आश्रम से आरम्भ होती है। अंग्रेज़ों ने नमक पर कर बढ़ाया, तो गाँधी जी ने दाण्डी-यात्रा की और समुद्र-तट पर नमक बनाकर कानून तोड़ा।
साइमन कमीशन का देशव्यापी बहिष्कार हुआ। जनता ने स्वदेशी अपनाया और विदेशी वस्तुओं का त्याग किया। अनेक नेता जेल गए।
सन् 1942 में गाँधी जी ने 'अंग्रेज़ो, भारत छोड़ो' का नारा दिया। इसी बीच मुस्लिम लीग ने देश-विभाजन की माँग तेज की और आज़ाद हिन्द फ़ौज का भी उल्लेख आता है। अन्त में देश स्वतन्त्र हुआ, पर विभाजन के कारण दंगे भड़क उठे। गाँधी जी इनसे बहुत दुखी हुए और शान्ति के लिए उपवास किया।

निष्कर्ष:
इस प्रकार 'मुक्तियज्ञ' की कथावस्तु गाँधी जी के नेतृत्व में हुए मुक्ति-संग्राम का

क्रमबद्ध चित्र है। कवि ने स्वतन्त्रता को एक पवित्र यज्ञ माना है, जिसमें अनगिनत लोगों ने आहुति दी।

OR

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के आधार पर 'गाँधीजी' का चरित्र-चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: नायक का परिचय:
सुमित्रानन्दन पन्त कृत 'मुक्तियज्ञ' गांधी-युग के स्वतन्त्रता-संघर्ष का काव्य है। इसके नायक महात्मा गांधी हैं और सारी कथा उन्हीं के नेतृत्व में आगे बढ़ती है।

चरण 2: चरित्रगत विशेषताएँ:
1. सत्य और अहिंसा के पुजारी: देश में हिंसा फैलने पर भी वे सत्य और अहिंसा के मार्ग पर अटल रहते हैं।
2. दृढ़-प्रतिज्ञ: दाण्डी-यात्रा में वे चौबीस दिन पैदल चलकर समुद्र-तट पर नमक-कानून तोड़ते हैं। कोई बाधा उन्हें रोक नहीं पाती।
3. जन-नायक: जनता उनके एक संकेत पर सब कुछ न्योछावर करने को तैयार रहती है।
4. समदर्शी: वे सबको समान दृष्टि से देखते हैं और छुआछूत मिटाने का प्रयास करते हैं।
5. मानवता के पोषक: उनका विश्वास है कि घृणा प्रेम से ही मिटती है।

निष्कर्ष:
गांधीजी सत्य, प्रेम, त्याग और दृढ़ता के मूर्त रूप हैं। पन्त जी ने उन्हें युग-प्रवर्तक महामानव के रूप में चित्रित किया है।

7(b). 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: नायक का परिचय:
रामधारी सिंह 'दिनकर' रचित 'रश्मिरथी' का नायक कर्ण है। वह कुन्ती का पुत्र है, पर सूत-पुत्र के रूप में पला। पूरा काव्य उसी के जीवन-संघर्ष पर केन्द्रित है।

चरण 2: चरित्र की विशेषताएँ:
1. महान वीर: रंगभूमि में उसने अर्जुन को चुनौती दी और सबको चकित कर दिया।
2. दानवीर: इन्द्र ब्राह्मण-वेश में आए, तो उसने पहचानकर भी कवच-कुण्डल दान कर दिए।
3. मित्र-निष्ठ: दुर्योधन ने उसे अंग देश का राजा बनाया था। कृष्ण ने राज्य का लोभ दिया, फिर भी उसने मित्र का साथ नहीं छोड़ा।
4. सहनशील: परशुराम के आश्रम में कीड़े के काटने पर भी वह चुप रहा।
5. सत्यवादी और स्वाभिमानी: गुरु से छल का दण्ड उसने स्वीकार किया, पर सत्य नहीं छिपाया।

निष्कर्ष:
कर्ण उदार, वीर, त्यागी और स्वाभिमानी नायक है। जन्म से नहीं, कर्म से महान बनता है, यही दिनकर का सन्देश है।

OR

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की कथावस्तु को संक्षेप में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: काव्य का परिचय:
'रश्मिरथी' रामधारी सिंह 'दिनकर' का सात सर्गों का खण्डकाव्य है। इसका आधार महाभारत की कर्ण-कथा है।

चरण 2: सर्गवार कथा:
प्रथम सर्ग: रंगभूमि में कर्ण अपना शौर्य दिखाता है। जाति के नाम पर रोके जाने पर दुर्योधन उसे अंग देश का राजा बना देता है।
द्वितीय सर्ग: कर्ण ब्राह्मण बनकर परशुराम का शिष्य बनता है। रहस्य खुलने पर गुरु उसे शाप देते हैं।
तृतीय सर्ग: शान्ति-दूत कृष्ण की बात दुर्योधन नहीं मानता। कृष्ण कर्ण को उसके जन्म का रहस्य बताते हैं, पर वह मित्र का साथ नहीं छोड़ता।
चतुर्थ सर्ग: कर्ण इन्द्र को कवच-कुण्डल दान कर देता है।
पंचम सर्ग: कुन्ती उसे पुत्र कहकर पाण्डवों के पक्ष में बुलाती है। कर्ण अर्जुन को छोड़ शेष चार पुत्रों को न मारने का वचन देता है।
षष्ठ सर्ग: महाभारत-युद्ध में कर्ण की शक्ति की परीक्षा होती है।
सप्तम सर्ग: सेनापति बनकर कर्ण अर्जुन से लड़ता है और वीरगति पाता है।

निष्कर्ष:
काव्य कर्ण को अपमान सहकर भी महान बनने वाले वीर के रूप में स्थापित करता है।

7(c). 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: नायक का परिचय:
'आलोकवृत्त' (कवि: गुलाब खण्डेलवाल) के नायक युगपुरुष महात्मा गाँधी हैं। काव्य में उनके जन्म से स्वतन्त्रता-प्राप्ति तक की कथा आठ सर्गों में कही गई है।

चरण 2: प्रमुख चारित्रिक विशेषताएँ:
1. सत्य और अहिंसा के पुजारी: दक्षिण अफ्रीका में भेदभाव सहकर उन्होंने अहिंसा को हिंसा से बड़ी शक्ति माना और सत्याग्रह अपनाया।
2. मातृभक्त और संयमी: माता को दिए वचन के कारण उन्होंने विदेश में भी मांस और मदिरा से दूरी रखी।
3. त्यागी और देशभक्त: उन्होंने निजी सुख छोड़कर जीवन देश-सेवा को दे दिया।
4. दृढ़ संकल्पी: चम्पारण, असहयोग और दाण्डी-यात्रा में वे अपने निश्चय पर अटल रहे।
5. साम्प्रदायिक सद्भाव के समर्थक: हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए उन्होंने उपवास किया।

निष्कर्ष:
गाँधी जी आदर्श, त्यागी और लोक-कल्याणकारी नायक हैं। उनका चरित्र सत्य, प्रेम और मानवता का सन्देश देता है।

OR

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य की कथावस्तु को अपने शब्दों में लिखिये। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: काव्य का परिचय:
'आलोकवृत्त' गुलाब खण्डेलवाल द्वारा रचित खण्डकाव्य है। यह आठ सर्गों में महात्मा गाँधी के जन्म से भारत की स्वतन्त्रता तक की कथा कहता है।

चरण 2: कथासार:
प्रथम सर्ग: पराधीन भारत की दशा का वर्णन है। पोरबन्दर में गाँधी जी का जन्म होता है।
द्वितीय सर्ग: बालक मोहनदास की शिक्षा और विदेश-यात्रा है। वे माता को दिए वचन

पर दृढ़ रहते हैं।
तृतीय सर्ग: दक्षिण अफ्रीका में अपमान झेलकर वे सत्याग्रह का मार्ग अपनाते हैं।
चतुर्थ सर्ग: भारत लौटकर चम्पारण और खेड़ा में किसानों की सहायता करते हैं।
पंचम सर्ग: असहयोग आन्दोलन चलता है। चौरी-चौरा की घटना पर आन्दोलन रुकता है।
षष्ठ सर्ग: दाण्डी-यात्रा से नमक-कानून तोड़ा जाता है।
सप्तम सर्ग: भारत छोड़ो आन्दोलन होता है और कस्तूरबा का देहान्त होता है।
अष्टम सर्ग: देश स्वतन्त्र होता है और गाँधी जी साम्प्रदायिक सद्भाव की प्रार्थना करते हैं।

निष्कर्ष:
काव्य सत्य, अहिंसा और लोक-कल्याण का सन्देश देता है।

7(d). 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर 'राज्यश्री' का चरित्र-चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रस्तावना:
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' रचित 'त्यागपथी' में सम्राट् हर्षवर्द्धन की कथा है। राज्यश्री हर्ष की छोटी बहन और इस काव्य की प्रमुख नारी-पात्र है। उसका जीवन त्याग, धैर्य और राष्ट्र-प्रेम का उदाहरण है।

चरण 2: राज्यश्री के चरित्र की विशेषताएँ:
1. त्यागमयी: कन्नौज का राज्य मिलने पर भी वह सिंहासन स्वीकार नहीं करती और सांसारिक सुखों से दूर रहना चाहती है।
2. धैर्यशील: माता-पिता, पति और भाई राज्यवर्द्धन की मृत्यु के दुःख सहकर भी वह टूटती नहीं।
3. भ्रातृ-प्रेम: वह हर्ष को स्नेह देती है और कठिन समय में भाई का सहारा बनती है।

4. धर्मपरायण: बौद्ध धर्म में उसकी गहरी श्रद्धा है और वह संन्यास लेकर तप करना चाहती है।
5. राष्ट्र-भक्त: चतुर्थ सर्ग में समझाए जाने पर वह संन्यास का विचार छोड़कर देश-सेवा का व्रत लेती है।

निष्कर्ष:
राज्यश्री आदर्श भारतीय नारी है, जिसमें कोमलता, त्याग और कर्तव्य-भावना एक साथ मिलती है।

OR

'त्यागपथी' खण्डकाव्य के चतुर्थ सर्ग का कथानक लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सर्ग का परिचय:
'त्यागपथी' रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' का पाँच सर्गों का ऐतिहासिक खण्डकाव्य है। चतुर्थ सर्ग में कथा का केन्द्र राज्यश्री का संन्यास-विचार और हर्ष का समझाना है।

चरण 2: कथानक:
तृतीय सर्ग के बाद हर्ष की राजसत्ता दृढ़ हो चुकी है। तब राज्यश्री राज्य और महलों का सुख छोड़कर गेरुए वस्त्र पहन संन्यास लेना चाहती है।
हर्ष उसे प्रेम से समझाते हैं कि वह मन से पहले ही संन्यासिनी है। उसका जीवन त्याग से भरा है।
आचार्य दिवाकर मित्र भी दोनों को उपदेश देते हैं कि केवल वन में जाकर तप करना ही संन्यास नहीं है। दुखी प्रजा और देश की सेवा उससे भी बड़ा धर्म है।
यह सुनकर राज्यश्री संन्यास का विचार छोड़ देती है। हर्ष और राज्यश्री दोनों देश-सेवा को ही अपना व्रत बना लेते हैं।

निष्कर्ष:

इस सर्ग का सन्देश है कि सच्चा त्याग कर्तव्य और लोक-कल्याण में है। इसी से अगले सर्ग की उदारता और दान की भूमिका बनती है।

7(e). 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के आधार पर 'दशरथ' का चरित्र-चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रस्तावना:
डॉ. शिवबालक शुक्ल रचित 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य में अयोध्या-नरेश दशरथ प्रमुख पात्र हैं। श्रवण की अनजाने में हत्या के कारण वे कथा के केन्द्र में आते हैं।

चरण 2: चरित्र की विशेषताएँ:
1. प्रतापी और कुशल राजा: उनके राज्य में शान्ति और सुख है। प्रजा उन्हें आदर देती है।
2. शब्दभेदी बाण के जानकार: वे आखेट-प्रेमी और वीर हैं। अन्धकार में जल की आवाज को पशु का शब्द समझकर वे बाण चला देते हैं।
3. पश्चाताप से भरे: श्रवण को घायल देखकर वे अत्यन्त दुखी होते हैं और आत्मग्लानि से भर जाते हैं।
4. सत्यवादी: वे बिना छिपाए आश्रम जाकर अपना अपराध स्वीकार करते हैं।
5. विनम्र और संवेदनशील: वे श्रवण की अन्तिम बात मानकर माता-पिता तक जल पहुँचाते हैं और उनके विलाप से द्रवित होते हैं।
6. दण्ड स्वीकार करने वाले: मुनि-दम्पति का शाप वे चुपचाप सिर झुकाकर स्वीकार करते हैं।

निष्कर्ष:
दशरथ वीर, न्यायप्रिय और पश्चाताप करने वाले राजा हैं। उनका चरित्र पाठक की करुणा जगाता है।

OR

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के संदेश सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सर्ग का स्थान:
डॉ. शिवबालक शुक्ल का 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य नौ सर्गों में है। इसका छठा सर्ग 'संदेश' है, जो श्रवण की मृत्यु के बाद माता-पिता तक समाचार पहुँचने की कथा कहता है।

चरण 2: कथावस्तु:
आश्रम में श्रवण के अन्धे माता-पिता प्यास से व्याकुल होकर बेटे की प्रतीक्षा कर रहे हैं। तभी उन्हें किसी के आने की आहट मिलती है।
वे समझते हैं कि श्रवण जल लेकर आ गया है और उससे देर का कारण पूछते हैं।
दशरथ जल लेकर पास पहुँचते हैं और पानी पीने का आग्रह करते हैं।
अपरिचित का स्वर सुनकर वृद्ध पिता का भ्रम टूटता है। वे परिचय पूछते हैं।
दशरथ अपना नाम बताकर सारी घटना कह देते हैं और श्रवण का अन्तिम सन्देश सुनाते हैं। पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनते ही माता-पिता करुण विलाप करने लगते हैं।

निष्कर्ष:
यह सर्ग करुण रस से भरा है। आगे के सर्ग में इसी शोक से शाप की घटना आती है।

7(f). 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर 'द्रौपदी' का चरित्र-चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रस्तावना:
द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी रचित 'सत्य की जीत' महाभारत के सभा-पर्व की द्यूत-सभा की घटना पर आधारित है। द्रौपदी इसकी नायिका है। कवि ने उसे असहाय नहीं, तेजस्वी और निडर नारी के रूप में दिखाया है।

चरण 2: चरित्र की विशेषताएँ:
1. स्वाभिमानी: दुःशासन उसे केश पकड़कर सभा में खींच लाता है, पर वह झुकती नहीं। वह इसे सारी नारी-जाति का अपमान मानती है।
2. निर्भीक और वीरांगना: वह दुःशासन को ललकारकर कहती है कि नारी का क्रोध देख।
3. तर्कशील: वह सभा से प्रश्न करती है कि स्वयं को हार चुके युधिष्ठिर को मुझे दाँव पर लगाने का अधिकार कैसे था।
4. सत्य-न्याय की पक्षधर: वह अधर्म के सामने चुप नहीं रहती और सबको धर्म याद दिलाती है।
5. आत्मविश्वासी: चीर-हरण के प्रयास में भी वह सत्य के बल पर अडिग रहती है।

निष्कर्ष:
द्रौपदी आधुनिक जागरूक नारी की प्रतीक है। उसी की दृढ़ता से काव्य में सत्य की जीत होती है।

OR

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य का कथानक संक्षेप में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: परिचय:
'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के रचयिता द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी हैं। इसकी कथा

महाभारत के सभापर्व से ली गई है और द्रौपदी के चीर-हरण की घटना पर आधारित है।

चरण 2: कथानक:
1. दुर्योधन कपट से पाण्डवों को जुए के लिए बुलाता है। युधिष्ठिर राज्य, भाइयों और स्वयं को हारकर अन्त में द्रौपदी को भी दाँव पर लगा देते हैं।
2. दुःशासन द्रौपदी को केश पकड़कर भरी सभा में खींच लाता है।
3. द्रौपदी निर्भय होकर पूछती है कि जो स्वयं को हार चुका हो, उसे पत्नी को दाँव पर लगाने का अधिकार कैसे है।
4. दुःशासन शस्त्र-बल को ही धर्म बताता है। दुर्योधन के भाई विकर्ण द्रौपदी की बात का समर्थन करते हैं।
5. दुःशासन चीर खींचने बढ़ता है, पर द्रौपदी के सत्य और आत्मबल के तेज से वह घबराकर पीछे हट जाता है।
6. सभा के लोग कौरवों की निन्दा करते हैं। धृतराष्ट्र पाण्डवों को मुक्त कर उनका राज्य लौटा देते हैं।

निष्कर्ष:
कथा का सन्देश है कि अन्त में सत्य और न्याय की ही जीत होती है, और नारी का सम्मान सर्वोपरि है।

8(a). दिये गये संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिये:
संस्कृतसाहित्यस्य आदिकविः वाल्मीकिः, महर्षिव्यासः, कविकुलगुरुः कालिदासः अन्ये च भास-भारवि-भवभूत्यादयो महाकवयः स्वकीयैः ग्रन्थरत्नैः अद्यापि पाठकानां हृदि विराजन्ते । इयं भाषा अस्माभिः मातृसमं सम्माननीया वन्दनीया च यतो भारतमातुः स्वातन्त्र्यं गौरवम् अखण्डत्वं सांस्कृतिकमेकत्वञ्च संस्कृतेनैव सुरक्षितुं शक्यन्ते । इयं संस्कृत भाषा सर्वासुभाषासु प्राचीनतमा श्रेष्ठा चास्ति । ततः सुष्ठूक्तम् भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गिर्वाणभारती इति ।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह गद्यांश 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्' से उद्धृत है। इसमें संस्कृत भाषा के महाकवियों और इस भाषा की श्रेष्ठता का वर्णन है।

चरण 2: शब्दार्थ:
आदिकविः = पहले कवि। कविकुलगुरुः = कवियों के गुरु। ग्रन्थरत्नैः = श्रेष्ठ ग्रन्थों से। विराजन्ते = शोभित होते हैं। स्वातन्त्र्यम् = स्वतन्त्रता। अखण्डत्वम् = अखण्डता। गिर्वाणभारती = देवताओं की वाणी।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:
संस्कृत साहित्य के आदिकवि वाल्मीकि, महर्षि व्यास, कविकुलगुरु कालिदास तथा भास, भारवि, भवभूति आदि महाकवि अपने ग्रन्थरूपी रत्नों से आज भी पाठकों के हृदय में विराजमान हैं। यह भाषा हमारे द्वारा माता के समान सम्मान और वन्दना के योग्य है, क्योंकि भारतमाता की स्वतन्त्रता, गौरव, अखण्डता और सांस्कृतिक एकता संस्कृत से ही सुरक्षित की जा सकती है। यह संस्कृत भाषा सब भाषाओं में सबसे प्राचीन और श्रेष्ठ है। इसीलिए ठीक ही कहा गया है कि सब भाषाओं में मुख्य, मधुर और दिव्य भाषा गिर्वाणभारती (संस्कृत) है।

निष्कर्ष:
संस्कृत प्राचीन, श्रेष्ठ और राष्ट्रीय एकता की रक्षक भाषा है, इसलिए वह माता के समान पूजनीय है।

OR

दिये गये संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिये:
अथैकः शकुनिः सर्वेषां मध्यादाशयग्रहणार्थं त्रिकृत्वः अश्रावयत् । ततः एकः काकः उत्थाय तिष्ठ तावत्, अस्य एतस्मिन् राज्याभिषेक काले एवं रूपं मुखम् क्रुद्धस्य च कीदृशं भविष्यति ? अनेन हि क्रुद्धेन अवलोकिताः वयं तप्तकटाहे प्रक्षिप्ततिलाः इव तत्र तत्रैव धक्ष्यामः । ईदृशो राजा मह्यं न रोचते इत्याह - न मे रोचते भद्रं व उलूकस्याभिषेचनम् । अक्रुद्धस्य मुखं पश्य कथं क्रुद्धो भविष्यति ॥

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह गद्यांश 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'जातक-कथा' से लिया गया है। यह कथा पक्षियों द्वारा उल्लू को राजा बनाने के प्रसंग की है, जिसमें कौआ इसका विरोध करता है।

चरण 2: शब्दार्थ:
शकुनिः = पक्षी। आशयग्रहणार्थम् = मन की बात या मत जानने के लिए। त्रिकृत्वः = तीन बार। अश्रावयत् = सुनाया, घोषणा की। काकः = कौआ। क्रुद्धः = क्रोध में आया हुआ। तप्तकटाहे = गरम कड़ाही में। धक्ष्यामः = जल जाएँगे। रोचते = अच्छा लगता है।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:
तब एक पक्षी ने सबके बीच सबका मत जानने के लिए तीन बार घोषणा की। इसके बाद एक कौआ उठकर बोला: ठहरो, अभी इसके राज्याभिषेक के समय ही इसका मुख ऐसा है, तो क्रोध आने पर कैसा होगा? इसके क्रोध से देखे गए हम गरम कड़ाही में डाले गए तिलों की तरह वहीं-के-वहीं जल जाएँगे। ऐसा राजा मुझे पसन्द नहीं है। यह कहकर उसने श्लोक कहा: तुम सबका कल्याण हो, पर उल्लू को राजा बनाना मुझे अच्छा नहीं लगता। जो क्रोध में नहीं है, उसका मुख देखो। क्रोध में आने पर वह कैसा हो जाएगा?

निष्कर्ष:
कौए का कहना है कि जो शान्त अवस्था में भी भयानक लगता है, वह क्रोधी होकर और भी कष्ट देगा। इसलिए वह राजा के योग्य नहीं है।

8(b). दिये गये श्लोकों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:
विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय ।
खलस्य साधोः विपरीतमेतज्ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'सुभाषितरत्नानि' से लिया गया है। यह सुभाषित-संग्रह का एक प्रसिद्ध श्लोक है। इसमें दुष्ट और सज्जन के स्वभाव की तुलना की गई है।

चरण 2: शब्दार्थ:
विवादाय = झगड़े के लिए। मदाय = घमण्ड के लिए। परेषाम् = दूसरों की। परिपीडनाय = कष्ट देने के लिए। खलस्य = दुष्ट का। साधोः = सज्जन का। विपरीतम् = उलटा। ज्ञानाय = ज्ञान के लिए। दानाय = दान के लिए। रक्षणाय = रक्षा के लिए।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:
दुष्ट व्यक्ति की विद्या झगड़ा करने के लिए होती है, उसका धन घमण्ड बढ़ाने के लिए होता है और उसकी शक्ति दूसरों को कष्ट पहुँचाने के लिए होती है।
सज्जन व्यक्ति के लिए यह सब उलटा होता है। उसकी विद्या ज्ञान के लिए, धन दान के लिए और शक्ति दूसरों की रक्षा के लिए होती है।

चरण 4: भावार्थ:
विद्या, धन और शक्ति एक ही होती हैं, पर उनका प्रयोग व्यक्ति के स्वभाव पर निर्भर करता है। दुष्ट इनका दुरुपयोग करता है, जबकि सज्जन इनका सदुपयोग करके समाज का भला करता है।

निष्कर्ष:
इस श्लोक का उत्तर एक श्लोक का ससन्दर्भ अनुवाद है। ऊपर पहला श्लोक (विद्या विवादाय धनं मदाय...) हल किया गया है।

OR

दिये गये श्लोकों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:
न चौरहार्यं न राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्या धनं सर्वधनप्रधानम् ॥

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह श्लोक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'सुभाषितरत्नानि' से लिया गया है। इसमें विद्या को सब धनों में श्रेष्ठ धन बताया गया है।

चरण 2: शब्दार्थ:
चौरहार्यम् = चोर द्वारा चुराने योग्य। राजहार्यम् = राजा द्वारा छीनने योग्य। भ्रातृभाज्यम् = भाइयों द्वारा बाँटने योग्य। भारकारि = बोझ बनने वाला। व्यये कृते = खर्च करने पर। वर्धते = बढ़ता है। सर्वधनप्रधानम् = सब धनों में श्रेष्ठ।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:
विद्या रूपी धन को न चोर चुरा सकता है और न राजा छीन सकता है। इसे भाई आपस में बाँट नहीं सकते और यह बोझ भी नहीं बनता।
खर्च करने पर यह सदा बढ़ता ही है। इसलिए विद्या रूपी धन सब धनों में प्रधान (श्रेष्ठ) है।

चरण 4: भावार्थ:
सोना-चाँदी जैसा धन खर्च होने पर घटता है और चोरी या बँटवारे का भय रहता है। विद्या दूसरों को देने से और बढ़ती है और सदा साथ रहती है।

निष्कर्ष:
यहाँ श्लोक (न चौरहार्यं न राजहार्यं...) का ससन्दर्भ अनुवाद किया गया है।

9. निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **नाच न आवै आँगन टेढ़ा**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यह लोकोक्ति है। इसका अर्थ लिखना और वाक्य में प्रयोग करना है।

चरण 2: अर्थ:
'नाच न आवै आँगन टेढ़ा' का अर्थ है: अपनी अयोग्यता या कमी को छिपाने के लिए दूसरी चीज़ों में दोष निकालना। जिसे नाचना नहीं आता, वह कहता है कि आँगन ही टेढ़ा है।

चरण 3: वाक्य में प्रयोग:
जब सुरेश से गणित का प्रश्न हल न हुआ तो वह प्रश्न-पत्र को ही गलत बताने लगा, यह तो 'नाच न आवै आँगन टेढ़ा' वाली बात है।

अंतिम उत्तर:
अर्थ: काम न आने पर साधनों या परिस्थितियों को दोष देना। प्रयोग ऊपर के वाक्य में है।

OR

निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **नौ दो ग्यारह होना**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
मुहावरा 'नौ दो ग्यारह होना' का अर्थ लिखकर वाक्य बनाना है।

चरण 2: अर्थ:
'नौ दो ग्यारह होना' का अर्थ है: चुपचाप भाग जाना, गायब हो जाना। संख्या 9 और 2 जोड़ने पर 11 होती है, पर यहाँ भाव तेजी से निकल भागने का है।

चरण 3: वाक्य में प्रयोग:
पुलिस को आते देखकर चोर नौ दो ग्यारह हो गए।

अंतिम उत्तर:
अर्थ: भाग जाना, चंपत हो जाना। प्रयोग ऊपर के वाक्य में है।

OR

निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **आँख दिखाना**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: अर्थ:
मुहावरा: आँख दिखाना।
अर्थ: क्रोध से देखकर डराना या धमकाना। जब कोई व्यक्ति गुस्से में आकर दूसरे को भय दिखाता है, तब यह मुहावरा प्रयुक्त होता है।

चरण 2: वाक्य-प्रयोग:
जब दुकानदार ने ग्राहक से उधार माँगा, तो ग्राहक उलटे उसे आँख दिखाने लगा।

निष्कर्ष:
आँख दिखाना का अर्थ है क्रोध करके धमकाना।

10(i). *अपठित गद्यांश:* इच्छाएं नाना हैं और नाना विधि हैं और वे उसे प्रवृत्त रखती हैं। उस प्रवृत्ति से वह रह-रहकर थक जाता है और निवृत्ति चाहता है। यह प्रवृत्ति और निवृत्ति का चक्र उसको द्वन्द्व से थका मारता है। इस संसार को वह अभी राग-भाव से चाहता है कि अगले क्षण उतने ही भाव-विराग से वह उसका विनाश चाहता है। पर राग-द्वेष की वासनाओं से अंत में झुंझलाइट ही उसे हाथ आती है।

(i) प्रवृत्ति और निवृत्ति के चक्र में फँसा मनुष्य क्यों रुक जाता है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न पूछता है कि प्रवृत्ति और निवृत्ति के चक्र में फँसा मनुष्य क्यों रुक जाता है। गद्यांश में इसका कारण दिया है।

चरण 2: गद्यांश से कारण:
गद्यांश के अनुसार मनुष्य की इच्छाएँ अनेक हैं और उनके रूप भी अनेक हैं। ये इच्छाएँ उसे हर समय किसी न किसी काम में लगाए रखती हैं।
इस लगातार दौड़-धूप से वह बार-बार थक जाता है। थकान के कारण वह काम से छुटकारा यानी निवृत्ति चाहने लगता है। इसी कारण वह रुक जाता है।

अंतिम उत्तर:
अनेक प्रकार की इच्छाएँ मनुष्य को निरंतर काम में लगाए रखती हैं, जिससे वह थककर रुक जाता है और निवृत्ति चाहता है।

10(ii). *अपठित गद्यांश:* इच्छाएं नाना हैं और नाना विधि हैं और वे उसे प्रवृत्त रखती हैं। उस प्रवृत्ति से वह रह-रहकर थक जाता है और निवृत्ति चाहता है। यह प्रवृत्ति और निवृत्ति का चक्र उसको द्वन्द्व से थका मारता है। इस संसार को वह अभी राग-भाव से चाहता है कि अगले क्षण उतने ही भाव-विराग से वह उसका विनाश चाहता है। पर राग-द्वेष की वासनाओं से अंत में झुंझलाइट ही उसे हाथ आती है।

(ii) प्रेम और ईर्ष्या की वासनाओं में पड़कर मनुष्य की स्थिति कैसी हो जाती है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रेम और ईर्ष्या का आशय यहाँ राग और द्वेष से है। प्रश्न यह पूछता है कि इनमें पड़कर मनुष्य की दशा कैसी होती है।

चरण 2: गद्यांश के आधार पर स्थिति:
मनुष्य किसी क्षण संसार को राग-भाव से चाहता है, यानी उससे लगाव रखता है।
अगले ही क्षण वह उतने ही तीव्र विराग-भाव से उसका विनाश चाहने लगता है।
उसका मन एक स्थान पर टिकता नहीं।
इस डाँवाडोल स्थिति का परिणाम यह होता है कि अंत में उसके हाथ केवल झुंझलाहट आती है।

अंतिम उत्तर:
राग-द्वेष की वासनाओं में पड़कर मनुष्य का मन अस्थिर हो जाता है और अंत में उसे झुंझलाहट और अशांति ही मिलती है।

10(iii). *अपठित गद्यांश:* इच्छाएं नाना हैं और नाना विधि हैं और वे उसे प्रवृत्त रखती हैं। उस प्रवृत्ति से वह रह-रहकर थक जाता है और निवृत्ति चाहता है। यह प्रवृत्ति और निवृत्ति का चक्र उसको द्वन्द्व से थका मारता है। इस संसार को वह अभी राग-भाव से चाहता है कि अगले क्षण उतने ही भाव-विराग से वह उसका विनाश चाहता है। पर राग-द्वेष की वासनाओं से अंत में झुंझलाइट ही उसे हाथ आती है।

(iii) व्यक्ति को जीवन में कौन-सा द्वन्द्व थका देता है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न पूछता है कि जीवन में कौन-सा द्वन्द्व मनुष्य को थका देता है। उत्तर गद्यांश की तीसरी पंक्ति में है।

चरण 2: गद्यांश से उत्तर:
गद्यांश में लिखा है कि प्रवृत्ति और निवृत्ति का चक्र मनुष्य को द्वन्द्व से थका मारता है। एक ओर इच्छाएँ उसे काम में लगाती हैं, यह प्रवृत्ति है। दूसरी ओर थककर वह काम से छूटना चाहता है, यह निवृत्ति है। इन दोनों की खींचतान ही द्वन्द्व है।

अंतिम उत्तर:
प्रवृत्ति और निवृत्ति का द्वन्द्व मनुष्य को जीवन में थका देता है।

OR

10(i). *अपठित गद्यांश:* आज के अनेक आर्थिक और सामाजिक विधानों की हम जाँच करें तो पता चलेगा कि वे हमारी सांस्कृतिक चेतना के क्षीण होने के कारण युगानुकूल परिवर्तन की कमी से बनी हुई रूढ़ियों के साथ संघर्ष की परिस्थिति से उत्पन्न माँग को पूरा करने के लिये अपनाये गये उपाय या अन्य द्वारा थोपी गई या उनका अनुकरण का स्वीकार की गई व्यवस्थाएँ मात्र है। भारतीय संस्कृति के नाम पर उन्हें जिन्दा रखा जा सकता है।

(i) युगानुरूप परिवर्तन एवं विकास न होने का क्या कारण है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न पूछता है कि हमारे विधानों और व्यवस्थाओं में समय के अनुसार परिवर्तन और विकास क्यों नहीं हो पाया।

चरण 2: गद्यांश से कारण:
गद्यांश कहता है कि आज के आर्थिक और सामाजिक विधानों की जाँच करें तो पता चलेगा कि हमारी सांस्कृतिक चेतना क्षीण हो गई है।
चेतना कमजोर होने से युगानुकूल परिवर्तन की कमी रही और रूढ़ियाँ बनी रहीं।

अंतिम उत्तर:

हमारी सांस्कृतिक चेतना का क्षीण होना ही युगानुरूप परिवर्तन और विकास न होने का कारण है।

10(ii). *अपठित गद्यांश:* आज के अनेक आर्थिक और सामाजिक विधानों की हम जाँच करें तो पता चलेगा कि वे हमारी सांस्कृतिक चेतना के क्षीण होने के कारण युगानुकूल परिवर्तन की कमी से बनी हुई रूढ़ियों के साथ संघर्ष की परिस्थिति से उत्पन्न माँग को पूरा करने के लिये अपनाये गये उपाय या अन्य द्वारा थोपी गई या उनका अनुकरण का स्वीकार की गई व्यवस्थाएँ मात्र है। भारतीय संस्कृति के नाम पर उन्हें जिन्दा रखा जा सकता है।

(ii) भारतीय सांस्कृतिक चेतना के कमजोर होने का मुख्य कारण क्या है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न पूछता है कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना कमजोर क्यों हुई। गद्यांश से जो संकेत मिलते हैं, उन्हीं के आधार पर उत्तर लिखना है।

चरण 2: गद्यांश के संकेत:
गद्यांश के अनुसार आज की अनेक व्यवस्थाएँ युगानुकूल परिवर्तन की कमी से बनी रूढ़ियों से संघर्ष के कारण जन्मी हैं।
कई व्यवस्थाएँ दूसरों द्वारा थोपी गई हैं या उनका अनुकरण करके स्वीकार कर ली गई हैं।
जब समाज अपनी परम्परा को समय के अनुसार नया रूप नहीं देता और बाहर की व्यवस्थाओं की नकल करता है, तब उसकी सांस्कृतिक चेतना कमजोर पड़ती है।

अंतिम उत्तर:
रूढ़ियों का बने रहना, समय के अनुसार परिवर्तन की कमी और दूसरों की व्यवस्थाओं का अनुकरण, इनसे भारतीय सांस्कृतिक चेतना कमजोर हुई है।

10(iii). *अपठित गद्यांश:* आज के अनेक आर्थिक और सामाजिक विधानों की हम जाँच करें तो पता चलेगा कि वे हमारी सांस्कृतिक चेतना के क्षीण होने के कारण युगानुकूल परिवर्तन की कमी से बनी हुई रूढ़ियों के साथ संघर्ष की परिस्थिति से उत्पन्न माँग को पूरा करने के लिये अपनाये गये उपाय या अन्य द्वारा थोपी गई या उनका अनुकरण का स्वीकार की गई व्यवस्थाएँ मात्र है। भारतीय संस्कृति के नाम पर उन्हें जिन्दा रखा जा सकता है।

(iii) 'परिस्थिति' एवं 'सांस्कृतिक' शब्दों का भाव स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न में दो शब्दों, परिस्थिति और सांस्कृतिक, का भाव पूछा गया है। दोनों का अर्थ गद्यांश के प्रसंग के साथ लिखना है।

चरण 2: परिस्थिति:
परिस्थिति का अर्थ है वे हालात या दशाएँ जिनमें कोई व्यक्ति या समाज रहता है। गद्यांश में संघर्ष की परिस्थिति का आशय ऐसे कठिन हालात से है, जिनमें कोई नई माँग पैदा होती है और उसे पूरा करने के लिए उपाय अपनाने पड़ते हैं।

चरण 3: सांस्कृतिक:
सांस्कृतिक का अर्थ है संस्कृति से संबंधित। संस्कृति में किसी समाज के विचार, आचरण, परम्पराएँ, मूल्य और रहन-सहन का ढंग आते हैं। गद्यांश में सांस्कृतिक चेतना का अर्थ इन मूल्यों के प्रति जागरूकता है।

निष्कर्ष:
परिस्थिति यानी आसपास की दशा और सांस्कृतिक यानी संस्कृति-संबंधी, यही इन शब्दों का भाव है।

11(a)(i). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए: तुरंग-तरंग -

(A) हाथी और घोड़ा

(B) घोड़ा और लहर

(C) कर्कश और ध्वनि

(D) विष और हलचल

Correct Answer: (B) घोड़ा और लहर

Solution:

चरण 1: शब्दों के अर्थ:
तुरंग का अर्थ है घोड़ा, अश्व। जैसे: राणा का तुरंग चेतक।
तरंग का अर्थ है लहर या हिलोर। जैसे: सागर की तरंगें।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) हाथी और घोड़ा: तुरंग का अर्थ घोड़ा है, हाथी नहीं, और तरंग का अर्थ घोड़ा नहीं। गलत।
(B) घोड़ा और लहर: तुरंग = घोड़ा, तरंग = लहर। सही।
(C) कर्कश और ध्वनि: दोनों अर्थ गलत हैं।
(D) विष और हलचल: दोनों अर्थ गलत हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (B) घोड़ा और लहर।

11(a)(ii). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए: कंगाल-कंकाल -

(A) पक्षी और मृत शरीर

(B) हड्डी और कंगन

(C) निर्धन और अस्थिपंजर

(D) स्वरूप और भूखा

Correct Answer: (C) निर्धन और अस्थिपंजर

Solution:

चरण 1: शब्दों के अर्थ:
कंगाल का अर्थ है निर्धन, गरीब, जिसके पास कुछ न हो।
कंकाल का अर्थ है शरीर की हड्डियों का ढाँचा, अस्थिपंजर।
जैसे: अकाल में कंगाल किसान कंकाल जैसा रह गया।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) पक्षी और मृत शरीर: कंगाल का अर्थ पक्षी नहीं है। गलत।
(B) हड्डी और कंगन: क्रम भी उलटा है और कंगाल का अर्थ हड्डी नहीं है। गलत।
(C) निर्धन और अस्थिपंजर: कंगाल = निर्धन, कंकाल = अस्थिपंजर। सही।
(D) स्वरूप और भूखा: दोनों अर्थ गलत हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) निर्धन और अस्थिपंजर।

11(b). निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **मंगल**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
जिस शब्द के एक से अधिक अर्थ हों, उसे बहुअर्थक शब्द कहते हैं। 'मंगल' ऐसा ही शब्द है।

चरण 2: शब्द के अर्थ:
1. मंगल = कल्याण, शुभ या भलाई।
2. मंगल = सौरमण्डल का एक ग्रह, जिसे लाल ग्रह भी कहते हैं।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:

मंगल (कल्याण) - बड़ों का आशीर्वाद सदा मंगल करता है।
मंगल (ग्रह) - वैज्ञानिक मंगल पर जीवन की खोज कर रहे हैं।

अंतिम उत्तर:
'मंगल' के दो अर्थ हैं: (1) कल्याण, (2) एक ग्रह।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **मित्र**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'मित्र' बहुअर्थक शब्द है, यानी इसके दो या अधिक अर्थ होते हैं। यहाँ दो सही अर्थ लिखने हैं।

चरण 2: शब्द के अर्थ:
1. मित्र = दोस्त, सखा या साथी।
2. मित्र = सूर्य।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:
मित्र (दोस्त) - सच्चा मित्र संकट में साथ नहीं छोड़ता।
मित्र (सूर्य) - मित्र के उगते ही अन्धकार दूर हो जाता है।

अंतिम उत्तर:
'मित्र' के दो अर्थ हैं: (1) दोस्त, (2) सूर्य।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **विधि**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: शब्द को समझें:
'विधि' शब्द के कई अर्थ होते हैं। प्रसंग के अनुसार उसका अर्थ तय होता है। यहाँ इसके दो अर्थ लिखने हैं।

चरण 2: पहला अर्थ:
विधि का पहला अर्थ है तरीका या ढंग। जैसे: दवा बनाने की विधि सरल है।

चरण 3: दूसरा अर्थ:
विधि का दूसरा अर्थ है भाग्य या ब्रह्मा। जैसे: विधि का लिखा कोई नहीं टाल सकता।

अंतिम उत्तर:
विधि के दो अर्थ: (1) तरीका, ढंग; (2) भाग्य, ब्रह्मा।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **द्विज**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'द्विज' का शाब्दिक अर्थ है दो बार जन्म लेने वाला। इसी से इसके कई अर्थ बने हैं। यहाँ दो सही अर्थ लिखने हैं।

चरण 2: शब्द के अर्थ:
1. द्विज = ब्राह्मण (संस्कार के बाद दूसरा जन्म माना जाने के कारण)।
2. द्विज = पक्षी, क्योंकि पक्षी पहले अण्डे के रूप में और फिर चूजे के रूप में जन्म लेता है।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:

द्विज (ब्राह्मण) - द्विज ने यज्ञ का विधिपूर्वक संचालन किया।
द्विज (पक्षी) - भोर होते ही वृक्षों पर द्विज चहचहाने लगे।

अंतिम उत्तर:
'द्विज' के दो अर्थ हैं: (1) ब्राह्मण, (2) पक्षी।

11(c)(i). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही शब्द का चयन करके लिखिए: ईश्वर में विश्वास करने वाला -

(A) पुजारी

(B) संन्यासी

(C) आस्तिक

(D) कर्मठ

Correct Answer: (C) आस्तिक

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'ईश्वर में विश्वास करने वाला' के लिए एक शब्द चुनना है। जो ईश्वर के अस्तित्व को मानता है, उसके लिए विशेष शब्द है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) पुजारी: मंदिर में पूजा करने वाला व्यक्ति। पूजा करना पेशा भी हो सकता है, यह विश्वास का सीधा अर्थ नहीं है।
(B) संन्यासी: जिसने घर-परिवार और संसार छोड़ दिया हो।
(C) आस्तिक: जो ईश्वर और परलोक में आस्था रखे। यही सही है।
(D) कर्मठ: जो अपने कर्म में लगा रहे, परिश्रमी।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) आस्तिक

11(c)(ii). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही शब्द का चयन करके लिखिए: जो सब कुछ जानता हो -

(A) ज्ञाता

(B) विद्वान्

(C) सर्वज्ञ

(D) नीतिज्ञ

Correct Answer: (C) सर्वज्ञ

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'जो सब कुछ जानता हो' के लिए एक शब्द चुनना है। इसमें सर्व (सब) और ज्ञ (जानने वाला) का भाव होना चाहिए।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) ज्ञाता: जानने वाला। इसमें सब कुछ जानने का भाव नहीं है।
(B) विद्वान: पढ़ा-लिखा और ज्ञानी व्यक्ति, पर वह सब कुछ नहीं जानता।
(C) सर्वज्ञ: सर्व + ज्ञ, अर्थात् सब कुछ जानने वाला। यही सही है।
(D) नीतिज्ञ: नीति को जानने वाला। यह केवल एक विषय तक सीमित है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) सर्वज्ञ

11(d)(i). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: आपका आर्शीवाद चाहिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: अशुद्धि की पहचान:
दिया गया वाक्य: आपका आर्शीवाद चाहिए।
इसमें 'आर्शीवाद' शब्द अशुद्ध लिखा गया है।

चरण 2: शुद्ध रूप और कारण:
सही शब्द 'आशीर्वाद' है। यह 'आशीः + वाद' से बना है, इसलिए रेफ (र्) 'शी' के बाद आता है, 'आ' के बाद नहीं।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: आपका आशीर्वाद चाहिए। (दोष: वर्तनी)

11(d)(ii). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: चाचाजी की दशा सोचनीय है।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: अशुद्ध वाक्य की पहचान:
अशुद्ध वाक्य: चाचाजी की दशा सोचनीय है।
अशुद्धि शब्द 'सोचनीय' में है। यह वर्तनी की अशुद्धि है।

चरण 2: सही शब्द और उसका बनना:
शुद्ध शब्द 'शोचनीय' है। यह संस्कृत धातु 'शुच्' (शोक करना) से बना है और इसका अर्थ है: जिस पर शोक किया जाए, अर्थात् चिन्ताजनक या दयनीय। 'सोचना' क्रिया से

इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

चरण 3: शुद्ध वाक्य:
चाचाजी की दशा शोचनीय है।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: चाचाजी की दशा शोचनीय है। (अशुद्धि: 'सोचनीय' की जगह 'शोचनीय'।)

11(d)(iii). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: मोहन मेरा कनिष्ठ भ्राता है।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: वाक्य की जाँच:
वाक्य: मोहन मेरा कनिष्ठ भ्राता है।
यहाँ 'कनिष्ठ' और 'भ्राता' जैसे भारी तत्सम शब्द अपने छोटे भाई के लिए बोलचाल में ठीक नहीं बैठते। 'कनिष्ठ' शब्द पद, श्रेणी या आयु-क्रम में सबसे नीचे के लिए अधिक प्रयुक्त होता है।

चरण 2: शब्द-प्रयोग का नियम:
अपने से छोटे भाई के लिए सरल शब्द 'छोटा भाई' या शुद्ध साहित्यिक शब्द 'अनुज' लिखा जाता है। बड़े भाई के लिए 'अग्रज' आता है।

चरण 3: शुद्ध वाक्य:
मोहन मेरा छोटा भाई है।
(या: मोहन मेरा अनुज है।)

अंतिम उत्तर:

शुद्ध वाक्य: मोहन मेरा छोटा भाई है। (अशुद्धि: शब्द-प्रयोग, 'कनिष्ठ भ्राता' की जगह 'छोटा भाई' या 'अनुज'।)

11(d)(iv). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: राम की पिताभक्ति अनुकरणीय है।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: अशुद्ध वाक्य की पहचान:
अशुद्ध वाक्य: राम की पिताभक्ति अनुकरणीय है।
अशुद्धि शब्द 'पिताभक्ति' में है। यह वर्तनी और सन्धि की अशुद्धि है।

चरण 2: सही शब्द और सन्धि:
शुद्ध शब्द 'पितृभक्ति' है। यह पितृ + भक्ति से बना है, जिसमें 'पितृ' शब्द में ऋ की मात्रा (ृ) रहती है। 'पितार्' जैसा कोई शब्द नहीं होता।

चरण 3: शुद्ध वाक्य:
राम की पितृभक्ति अनुकरणीय है।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: राम की पितृभक्ति अनुकरणीय है। (अशुद्धि: 'पिताभक्ति' की जगह 'पितृभक्ति'।)

12(a). 'शांत' रस अथवा 'हास्य' रस का लक्षण सहित एक उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यहाँ दिए गए दो रसों में से पहले रस, शांत रस, का उत्तर है।

चरण 2: लक्षण:
संसार की नश्वरता, ईश्वर-चिंतन या तत्त्वज्ञान से मन में वैराग्य और शांति का भाव आता है। जब यह भाव विभाव आदि से पुष्ट होता है, तब शांत रस होता है। इसका स्थायी भाव निर्वेद (शम) है।

चरण 3: उदाहरण:
जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं।
सब अँधियारा मिट गया, जब दीपक देख्या माहिं॥

चरण 4: स्पष्टीकरण:
कबीर कहते हैं कि जब तक मन में अहंकार था, तब तक ईश्वर का अनुभव नहीं हुआ। अहंकार मिटते ही ईश्वर मिल गए और अज्ञान का अँधेरा दूर हो गया। यहाँ आत्मज्ञान आलंबन है। अहंकार का त्याग अनुभाव है। धृति और मति संचारी भाव हैं। निर्वेद स्थायी भाव पुष्ट होता है।

अंतिम उत्तर:
इस दोहे में शांत रस है।

12(b). 'उपमा' अलंकार अथवा 'संदेह' अलंकार का लक्षण एवं एक उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न में दो अलंकार दिए हैं, उपमा और संदेह। इस उत्तर में पहला अलंकार 'उपमा' लिखा गया है।

चरण 2: लक्षण:
जब किसी वस्तु या व्यक्ति की तुलना उसके गुण, रूप या क्रिया की समानता के आधार पर दूसरी वस्तु से की जाए, तो वहाँ उपमा अलंकार होता है।
इसके चार अंग होते हैं: उपमेय (जिसकी तुलना हो), उपमान (जिससे तुलना हो), साधारण धर्म (दोनों में मिलने वाला गुण) और वाचक शब्द (सम, सा, सरिस, जैसा, समान आदि)।

चरण 3: उदाहरण:
पीपर पात सरिस मन डोला।
यहाँ उपमेय 'मन', उपमान 'पीपर पात' (पीपल का पत्ता), साधारण धर्म 'डोलना' और वाचक शब्द 'सरिस' है। चारों अंग मौजूद हैं, इसलिए यह पूर्णोपमा है।

अंतिम उत्तर:
उपमा अलंकार में उपमेय की उपमान से समानता बताई जाती है। उदाहरण: पीपर पात सरिस मन डोला।

12(c). 'चौपाई' छन्द अथवा 'सोरठा' छन्द का लक्षण एवं उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न में चौपाई अथवा सोरठा में से एक छन्द का लक्षण और उदाहरण लिखना है। इस उत्तर में पहला छन्द 'चौपाई' लिखा गया है।

चरण 2: लक्षण:
चौपाई सम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। दो चरणों की एक अर्द्धाली बनती है। चरण के अंत में जगण (।S।) और तगण (SS।) नहीं आना चाहिए।

चरण 3: उदाहरण (तुलसीदास, रामचरितमानस):
बंदउँ गुरु पद पदुम परागा।
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा॥

चरण 4: जाँच:
'बंदउँ गुरु पद पदुम परागा' में 16 मात्राएँ गिनी जाती हैं, और 'सुरुचि सुबास सरस अनुरागा' में भी 16 मात्राएँ हैं। दोनों चरण एक ही मात्रा-संख्या के हैं और अंत में 'परागा' तथा 'अनुरागा' की तुक मिलती है।

अंतिम उत्तर:
चौपाई 16 मात्राओं के चार चरणों वाला सम मात्रिक छन्द है।

13. दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित विज्ञापन के आधार पर संबन्धित कॉलेज में 'कम्प्यूटर ऑपरेटर' के पद पर नियुक्ति हेतु उस कॉलेज के प्रबन्धक को आवेदन पत्र लिखिये जिसमें अपनी शैक्षिक योग्यता का भी उल्लेख हो।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यह नौकरी के लिए आवेदन पत्र है। इसे कॉलेज के प्रबन्धक को लिखना है। पत्र में विज्ञापन का उल्लेख, पद का नाम और अपनी शैक्षिक योग्यता स्पष्ट लिखनी है।

चरण 2: पत्र के मुख्य अंग:
प्रेषक का पता, दिनांक, प्रबन्धक का पता, विषय, संबोधन, विज्ञापन का संदर्भ, शैक्षिक योग्यता, अनुभव, निवेदन और स्वनिर्देश। योग्यता के प्रमाण पत्र संलग्न करने का उल्लेख भी करें।

चरण 3: पूरा पत्र:
प्रेषक,

क ख ग,
32, शास्त्री नगर,
मेरठ (उत्तर प्रदेश)

दिनांक: 20 सितम्बर 2026

सेवा में,
प्रबन्धक महोदय,
आदर्श इंटर कॉलेज,
मेरठ।

विषय: कम्प्यूटर ऑपरेटर के पद हेतु आवेदन पत्र।

महोदय,
विनम्र निवेदन है कि दैनिक समाचार पत्र में दिनांक 18 सितम्बर 2026 को प्रकाशित विज्ञापन से मुझे ज्ञात हुआ कि आपके कॉलेज में कम्प्यूटर ऑपरेटर का एक पद रिक्त है। मैं इस पद के लिए अपना आवेदन प्रस्तुत कर रहा हूँ।
मेरी शैक्षिक योग्यता इस प्रकार है: मैंने वर्ष 2020 में हाईस्कूल, वर्ष 2022 में इंटरमीडिएट तथा वर्ष 2025 में बी.सी.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। मैंने एक वर्ष का कम्प्यूटर प्रशिक्षण भी लिया है और एम.एस. ऑफिस तथा टाइपिंग में कुशल हूँ।
मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि पूरी निष्ठा और परिश्रम से कार्य करूँगा। अतः आपसे प्रार्थना है कि मुझे इस पद पर नियुक्त करने की कृपा करें। मेरे प्रमाण पत्रों की प्रतियाँ इस पत्र के साथ संलग्न हैं।

धन्यवाद सहित,
भवदीय,
क ख ग

निष्कर्ष:

आवेदन पत्र में विज्ञापन की तिथि, पद का नाम, शैक्षिक योग्यता, कार्य का आश्वासन और संलग्न प्रमाण पत्रों का उल्लेख अवश्य होना चाहिए।

OR

अपने गाँव में फर्जी राशन कार्डों की जाँच हेतु जिला पूर्ति अधिकारी को एक शिकायती पत्र लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: पत्र का प्रकार समझें:
यह एक औपचारिक शिकायती पत्र है। इसे जिला पूर्ति अधिकारी को लिखना है। पत्र में गाँव का नाम, फर्जी राशन कार्डों की स्थिति और जाँच की माँग स्पष्ट होनी चाहिए। भाषा शिष्ट और तथ्यों पर आधारित रखें।

चरण 2: पत्र का प्रारूप:
पत्र में क्रम से ये अंग आते हैं: प्रेषक का पता, दिनांक, सेवा में, विषय, संबोधन, मुख्य भाग, स्वनिर्देश और नाम।

चरण 3: पत्र:
प्रेषक:
क ख ग,
ग्राम व पोस्ट: रामनगर,
जनपद: हरिपुर (उत्तर प्रदेश)।

दिनांक: 12 मार्च, 2026

सेवा में,
श्रीमान जिला पूर्ति अधिकारी,
जनपद: हरिपुर।

विषय: गाँव में फर्जी राशन कार्डों की जाँच कराने हेतु शिकायती पत्र।

महोदय,
मैं ग्राम रामनगर का निवासी हूँ। मैं आपका ध्यान अपने गाँव में बने फर्जी राशन कार्डों की ओर दिलाना चाहता हूँ। हमारे गाँव में कई ऐसे लोगों के नाम राशन कार्ड बने हुए हैं, जो या तो गाँव में रहते ही नहीं हैं या जिनकी मृत्यु हो चुकी है। कुछ लोगों के दो-दो कार्ड भी बने हुए हैं।

इन फर्जी कार्डों पर सस्ते दर का अनाज, चीनी और मिट्टी का तेल उठाया जा रहा है। इस कारण गाँव के सचमुच गरीब और पात्र परिवारों को समय पर पूरा राशन नहीं मिल पाता। कई परिवार तो राशन कार्ड के लिए महीनों से चक्कर लगा रहे हैं।

अतः आपसे प्रार्थना है कि किसी जिम्मेदार अधिकारी से गाँव के सभी राशन कार्डों की जाँच कराई जाए। फर्जी कार्ड निरस्त किए जाएँ और दोषी व्यक्तियों पर कठोर कार्रवाई हो। इससे पात्र परिवारों को उनका हक मिल सकेगा।

धन्यवाद सहित।

भवदीय,
क ख ग
ग्राम रामनगर, जनपद हरिपुर

निष्कर्ष:
ऊपर दिया गया पत्र शिकायती पत्र के सही प्रारूप में है। इसमें समस्या, उसका दुष्परिणाम और जाँच की माँग तीनों बातें क्रम से आ गई हैं।

14. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:
नयी शिक्षा नीति 2020 की विशेषताएँ

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: निबन्ध की रूपरेखा:

1. प्रस्तावना: शिक्षा और नयी नीति का महत्त्व
2. नीति का परिचय और उद्देश्य
3. विद्यालयी शिक्षा में बदलाव (5+3+3+4)
4. उच्च शिक्षा में सुधार
5. मातृभाषा, बहुभाषिकता और व्यावसायिक शिक्षा
6. क्रियान्वयन की चुनौतियाँ
7. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध: नयी शिक्षा नीति 2020 की विशेषताएँ:

प्रस्तावना

किसी भी देश का भविष्य उसकी शिक्षा-व्यवस्था पर टिका होता है। समय बदलता है तो शिक्षा के ढंग को भी बदलना पड़ता है। भारत में पिछली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में बनी थी और 1992 में उसमें कुछ संशोधन हुए थे। लगभग तीन दशक बाद 29 जुलाई 2020 को केन्द्र सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की घोषणा की। इसका मसौदा डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति ने तैयार किया था।

नीति का उद्देश्य

इस नीति का लक्ष्य रटने की जगह समझ, सोच और कौशल पर बल देना है। यह चाहती है कि हर बालक को उसकी रुचि के अनुसार पढ़ने का अवसर मिले और शिक्षा सबके लिए समान, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण हो। नीति में शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 6 प्रतिशत खर्च करने और 2030 तक स्कूली शिक्षा में सौ प्रतिशत नामांकन का लक्ष्य रखा गया है।

विद्यालयी शिक्षा में बदलाव

पुरानी 10+2 प्रणाली की जगह अब 5+3+3+4 की नयी संरचना रखी गई है। इसमें तीन वर्ष की प्री-प्राथमिक शिक्षा और कक्षा 1-2 को मिलाकर आधारभूत चरण बनाया गया है, फिर प्रारम्भिक, मध्य और माध्यमिक चरण आते हैं। कक्षा 5 तक, और हो सके तो कक्षा 8 तक, पढ़ाई का माध्यम मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा रखने पर जोर है। कला, विज्ञान और वाणिज्य के बीच की कठोर दीवार हटाई गई है, इसलिए विद्यार्थी अपनी पसंद के विषय चुन सकता है। बोर्ड परीक्षाओं का बोझ घटाने की भी बात कही

गई है।

उच्च शिक्षा में सुधार

उच्च शिक्षा में स्नातक पाठ्यक्रम चार वर्ष का हो सकता है और उसमें बहु-प्रवेश तथा बहु-निकास की सुविधा है। एक वर्ष पढ़ने पर प्रमाणपत्र, दो वर्ष पर डिप्लोमा और तीन वर्ष पर डिग्री मिलती है। विद्यार्थियों के अंक और क्रेडिट 'एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट' में जमा होते हैं। उच्च शिक्षा के लिए एक ही नियामक संस्था, भारतीय उच्च शिक्षा आयोग, बनाने का प्रस्ताव है। 2035 तक सकल नामांकन अनुपात को 50 प्रतिशत तक पहुँचाने का लक्ष्य है।

भाषा और व्यावसायिक शिक्षा

नीति में त्रिभाषा सूत्र को अपनाया गया है, पर किसी भाषा को थोपा नहीं गया है। संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं को बढ़ावा मिलेगा। कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा और इंटर्नशिप जोड़ी गई है, जिससे बच्चा पढ़ाई के साथ कोई हुनर भी सीख सके।

चुनौतियाँ

इतनी बड़ी नीति को लागू करने के लिए प्रशिक्षित शिक्षक, अच्छे भवन, तकनीकी साधन और पर्याप्त धन चाहिए। गाँवों और दूरदराज़ के क्षेत्रों में इंटरनेट और संसाधनों की कमी एक बड़ी बाधा है। केन्द्र और राज्य सरकारों के आपसी तालमेल के बिना यह सफल नहीं हो सकती।

उपसंहार

निष्कर्ष यह है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा को रटन्त प्रणाली से निकालकर कौशल, नैतिकता और नवाचार की ओर ले जाने वाला साहसिक कदम है। यदि इसे ईमानदारी और सही योजना से लागू किया जाए तो भारत फिर से ज्ञान का वैश्विक केन्द्र बन सकता है।

निष्कर्ष:

यह निबन्ध रूपरेखा के क्रम में लिखा गया है और प्रस्तावना से उपसंहार तक पूर्ण है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:

आतंकवाद की समस्या और समाधान

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: निबन्ध की रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. आतंकवाद का अर्थ और स्वरूप
3. आतंकवाद के प्रमुख कारण
4. भारत और विश्व पर दुष्प्रभाव
5. समाधान के उपाय
6. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध: आतंकवाद की समस्या और समाधान:

प्रस्तावना

आज का युग विज्ञान और प्रगति का युग है, पर इसी युग में मानवता के सामने सबसे भयानक संकटों में से एक आतंकवाद खड़ा है। निर्दोष लोगों की हत्या, बम-विस्फोट, अपहरण और भय का वातावरण किसी भी सभ्य समाज को शोभा नहीं देता। भारत ने कश्मीर, पंजाब, मुम्बई और संसद पर हुए हमलों के रूप में इस पीड़ा को कई बार झेला है।

आतंकवाद का अर्थ और स्वरूप

आतंकवाद का अर्थ है हिंसा और भय के बल पर अपनी बात मनवाने का प्रयास। आतंकी अपने लक्ष्य के लिए आम नागरिकों, महिलाओं और बच्चों तक को निशाना बनाते हैं। इसका उद्देश्य सरकार और समाज में डर फैलाना, अस्थिरता पैदा करना और देश की एकता को तोड़ना होता है। यह अब किसी एक देश की समस्या नहीं रही, बल्कि सीमा-पार और अन्तर्राष्ट्रीय रूप ले चुकी है।

आतंकवाद के प्रमुख कारण

आतंकवाद के पीछे अनेक कारण होते हैं। गरीबी, बेरोजगारी और अशिक्षा के कारण युवा आसानी से बहकावे में आ जाते हैं। धार्मिक कट्टरता और गलत व्याख्या भी उन्हें हिंसा की ओर धकेलती है। कुछ देश अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए आतंकी संगठनों को धन, हथियार और प्रशिक्षण देते हैं। सोशल मीडिया के दुरुपयोग से भी झूठा प्रचार फैलाया जाता है। सीमाओं पर कमजोर निगरानी और आपसी अविश्वास भी इसे बढ़ावा देता है।

दुष्प्रभाव

आतंकी घटनाओं से अनगिनत परिवार उजड़ जाते हैं। अर्थव्यवस्था को भारी हानि होती है, पर्यटन और उद्योग ठप हो जाते हैं। समाज में सम्प्रदायों के बीच शक और घृणा बढ़ती है। सुरक्षा पर होने वाला भारी व्यय विकास-कार्यों से हटकर लगाना पड़ता है। बच्चों के मन पर भय की गहरी छाप पड़ जाती है।

समाधान के उपाय

आतंकवाद को जड़ से मिटाने के लिए कठोर और बहुआयामी कदम आवश्यक हैं। सुरक्षा बलों को आधुनिक हथियार और गुप्तचर तंत्र की मजबूती मिलनी चाहिए। आतंकियों को शीघ्र और कड़ा दण्ड देने की न्याय-व्यवस्था हो। सभी देशों को मिलकर आतंकवाद के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर एकजुट होना होगा और आतंक को पनाह देने वालों पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगाने होंगे। साथ ही युवाओं को शिक्षा, रोजगार और सही मार्गदर्शन देकर उन्हें इस राह से बचाना होगा। नागरिकों को भी जागरूक रहना चाहिए और संदिग्ध गतिविधि की सूचना पुलिस को देनी चाहिए।

उपसंहार

आतंकवाद मानवता का शत्रु है और इसका कोई धर्म नहीं होता। शान्ति, भाईचारा और सद्भाव की शिक्षा ही इसका स्थायी इलाज है। यदि सरकार, समाज और विश्व-समुदाय मिलकर प्रयास करें तो वह दिन दूर नहीं जब पूरी दुनिया भय से मुक्त होकर शान्ति से साँस ले सकेगी।

निष्कर्ष:

यह निबन्ध रूपरेखा के क्रम में लिखा गया है और प्रस्तावना से उपसंहार तक पूर्ण है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:
बेरोजगारी की समस्या और समाधान

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:

1. प्रस्तावना

2. बेरोजगारी का अर्थ
3. बेरोजगारी के कारण
4. बेरोजगारी के दुष्परिणाम
5. समस्या का समाधान
6. सरकारी प्रयास
7. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध:

प्रस्तावना

भारत आज संसार का सबसे युवा देश है, परन्तु यहाँ के करोड़ों युवा काम की तलाश में भटक रहे हैं। पढ़ाई पूरी करने के बाद भी उन्हें योग्यता के अनुसार रोजगार नहीं मिलता। बेरोजगारी की यह समस्या देश की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा बन गई है।

बेरोजगारी का अर्थ

जब कोई व्यक्ति काम करने के योग्य और इच्छुक होता है, फिर भी उसे काम नहीं मिलता, तो उसे बेरोजगार कहते हैं। कुछ लोगों के पास काम तो होता है, पर वह उनकी योग्यता से बहुत कम स्तर का होता है। इसे अर्द्ध-बेरोजगारी कहा जाता है।

बेरोजगारी के कारण

इसका सबसे बड़ा कारण तेजी से बढ़ती जनसंख्या है। नौकरियाँ कम हैं और आवेदन करने वाले बहुत अधिक। हमारी शिक्षा-प्रणाली भी किताबी ज्ञान पर अधिक जोर देती है और व्यावहारिक कौशल कम सिखाती है। लोग खेती छोड़कर शहरों की ओर भाग रहे हैं। बड़ी मशीनों के आने से कुटीर और लघु उद्योग कमजोर हुए हैं। सरकारी नौकरी के मोह के कारण भी युवा निजी काम या स्वरोजगार से बचते हैं।

बेरोजगारी के दुष्परिणाम

बेरोजगार युवक निराशा और तनाव में घिर जाता है। गरीबी बढ़ती है और परिवार का पालन-पोषण कठिन हो जाता है। कई बार युवक चोरी, नशे और अपराध की राह पकड़ लेते हैं। देश की प्रतिभा विदेश चली जाती है और समाज में असन्तोष फैलता है।

समस्या का समाधान

जनसंख्या पर नियन्त्रण करना सबसे पहला कदम है। शिक्षा को रोजगारपरक बनाया जाए और तकनीकी तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण पर बल दिया जाए। कुटीर उद्योगों, हस्तशिल्प और लघु उद्योगों को प्रोत्साहन मिले। गाँवों में ही रोजगार के साधन बढ़ाए

जाएँ, ताकि शहरों की ओर पलायन रुके। युवाओं को अपना काम शुरू करने की सोच अपनानी चाहिए।

सरकारी प्रयास

सरकार ने मनरेगा, कौशल भारत, स्टार्टअप इण्डिया, मुद्रा योजना और मेक इन इण्डिया जैसी योजनाएँ चलाई हैं। इनसे लाखों लोगों को काम और प्रशिक्षण मिला है, फिर भी अभी बहुत कुछ करना शेष है।

उपसंहार

बेरोजगारी दूर होने पर ही देश की युवा-शक्ति राष्ट्र-निर्माण में लग सकेगी। सरकार, समाज और युवा तीनों को मिलकर प्रयास करना होगा। तभी भारत समृद्ध और आत्मनिर्भर बनेगा।

निष्कर्ष:

कौशल, स्वरोजगार और सही नीतियों के सहारे बेरोजगारी की समस्या को कम किया जा सकता है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:

पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: निबन्ध की रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. पर्यावरण का अर्थ
3. पर्यावरण-संरक्षण का महत्त्व
4. प्रदूषण और उसके कारण
5. संरक्षण के उपाय
6. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध: पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व:

प्रस्तावना

प्रकृति ने मनुष्य को हवा, पानी, धरती, वन और जीव-जन्तु जैसे अनमोल उपहार दिए हैं। परन्तु आज विकास की अंधी दौड़ में मनुष्य ने इन्हीं उपहारों को नष्ट करना शुरू कर दिया है। हवा जहरीली हो रही है, नदियाँ मैली हैं और धरती का तापमान बढ़ रहा है। ऐसे में पर्यावरण की रक्षा हमारे अस्तित्व का प्रश्न बन गई है।

पर्यावरण का अर्थ

'पर्यावरण' शब्द परि और आवरण के मेल से बना है, जिसका अर्थ है चारों ओर से घेरने वाला। हमारे आस-पास की वायु, जल, मिट्टी, वनस्पति और प्राणी मिलकर पर्यावरण बनाते हैं। ये सब एक-दूसरे पर निर्भर हैं और इनमें से किसी एक के बिगड़ने पर पूरा संतुलन बिगड़ जाता है।

पर्यावरण-संरक्षण का महत्त्व

स्वच्छ पर्यावरण से ही स्वस्थ जीवन सम्भव है। शुद्ध वायु से हमें ऑक्सीजन मिलती है, वृक्ष वर्षा कराते हैं और मिट्टी की उर्वरता बनाए रखते हैं। स्वच्छ जल के बिना जीवन असम्भव है। प्रदूषित वातावरण दमा, कैंसर और हृदय रोग जैसी बीमारियाँ फैलाता है। हमारी अर्थव्यवस्था, खेती और उद्योग भी प्राकृतिक संसाधनों पर टिके हैं। यदि हम आज पर्यावरण को नहीं बचाएँगे तो आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ शेष नहीं रहेगा।

प्रदूषण और उसके कारण

पर्यावरण बिगड़ने के मुख्य कारण हैं तीव्र जनसंख्या-वृद्धि, वनों की अन्धाधुन्ध कटाई, कारखानों और वाहनों से निकलता धुआँ, रासायनिक खाद और कीटनाशकों का अधिक प्रयोग, प्लास्टिक का कचरा और नदियों में गन्दे नाले का बहाव। इनसे वायु, जल, ध्वनि और मृदा-प्रदूषण बढ़ता है। ओजोन परत में छेद और ग्लोबल वार्मिंग इसके ही गम्भीर परिणाम हैं, जिनके कारण ग्लेशियर पिघल रहे हैं और मौसम का चक्र बदल रहा है।

संरक्षण के उपाय

पर्यावरण बचाने के लिए सबसे पहले अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए। कारखानों में धुआँ और जल शुद्ध करने के संयंत्र अनिवार्य हों। प्लास्टिक का उपयोग घटाकर कपड़े या कागज के थैले अपनाएँ। सौर और पवन ऊर्जा जैसे स्वच्छ स्रोतों को बढ़ावा दिया जाए। जल की बचत करें और नदियों को गन्दगी से बचाएँ। सरकार ने पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 जैसे कानून बनाए हैं और हर वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है, पर इन्हें कड़ाई से लागू करना आवश्यक है।

उपसंहार
पर्यावरण की रक्षा केवल सरकार का काम नहीं, हम सबका कर्तव्य है। हमारी संस्कृति में वृक्ष, नदी और पृथ्वी को माता माना गया है। यदि हम प्रकृति का सम्मान करेंगे तो प्रकृति भी हमारी रक्षा करेगी। आइए संकल्प लें कि हम पेड़ लगाएँगे, जल बचाएँगे और धरती को हरा-भरा रखेंगे।

निष्कर्ष:
यह निबन्ध रूपरेखा के क्रम में लिखा गया है और प्रस्तावना से उपसंहार तक पूर्ण है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए: **जीवन में वृक्षारोपण का महत्त्व**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:
1. प्रस्तावना
2. वृक्षों से मिलने वाले लाभ
3. पर्यावरण-संतुलन में वृक्षों की भूमिका
4. वृक्षों की कटाई के दुष्परिणाम
5. वृक्षारोपण के लिए किए गए प्रयास
6. हमारा कर्तव्य
7. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध: जीवन में वृक्षारोपण का महत्त्व:
प्रस्तावना: वृक्ष धरती का श्रृंगार और मनुष्य के सच्चे साथी हैं। भारतीय संस्कृति में पीपल, तुलसी, बरगद और आँवला जैसे वृक्षों की पूजा की जाती रही है। आज बढ़ती जनसंख्या, उद्योगों और सड़कों के कारण वनों की कटाई तेज़ी से हो रही है। ऐसे में वृक्षारोपण केवल शौक नहीं, जीवन बचाने की आवश्यकता बन गया है।
वृक्षों से मिलने वाले लाभ: वृक्ष हमें प्राणवायु ऑक्सीजन देते हैं और कार्बन

डाइऑक्साइड को सोखते हैं। इनसे फल, फूल, लकड़ी, औषधि, गोंद और पशुओं के लिए चारा मिलता है। घर, फर्नीचर और कागज़ जैसी अनेक वस्तुएँ वृक्षों से ही बनती हैं। गाँवों में वृक्ष आय का भी साधन हैं।

पर्यावरण-संतुलन में भूमिका: वृक्ष वर्षा कराने में सहायक होते हैं। इनकी जड़ें मिट्टी को बाँधकर रखती हैं, जिससे भूमि का कटाव और बाढ़ रुकती है। वृक्ष तापमान को कम रखते हैं तथा धूल और धुएँ को रोककर वायु को शुद्ध करते हैं। वन पशु-पक्षियों के घर हैं, इसलिए जैव विविधता भी वृक्षों पर ही टिकी है।

वृक्षों की कटाई के दुष्परिणाम: वनों के कटने से वर्षा घटी है, भूजल का स्तर नीचे गया है और रेगिस्तान का क्षेत्र बढ़ रहा है। सूखा, बाढ़, प्रदूषण और तापमान में वृद्धि इसी लापरवाही का फल हैं। शहरों में हरियाली घटने से लोग साँस और हृदय के रोगों से पीड़ित हो रहे हैं।

वृक्षारोपण के लिए प्रयास: हमारे देश में प्रतिवर्ष जुलाई के पहले सप्ताह में वन महोत्सव मनाया जाता है। इसमें स्थान-स्थान पर पौधे लगाए जाते हैं। चिपको आन्दोलन वृक्ष-रक्षा का प्रेरक उदाहरण है, जिसमें ग्रामीणों ने पेड़ों से लिपटकर उन्हें कटने से बचाया। विद्यालयों में भी एक छात्र, एक पौधा जैसे अभियान चलाए जाते हैं।

हमारा कर्तव्य: हर व्यक्ति जन्मदिन, विवाह या किसी शुभ अवसर पर एक पौधा अवश्य लगाए। केवल पौधा लगाना ही काफ़ी नहीं है, उसे पानी, खाद और सुरक्षा देकर बड़ा करना भी आवश्यक है। नीम, पीपल, आम, अशोक और शीशम जैसे स्थानीय वृक्ष लगाना उत्तम रहता है। सड़कों, नहरों और खाली भूमि के किनारे वृक्ष पंक्ति में लगाने चाहिए।

उपसंहार: वृक्ष हमारे जीवन के आधार हैं। यदि हम आज पौधे लगाएँगे, तो कल हमारी संतानों को स्वच्छ वायु, जल और सुखद वातावरण मिलेगा। इसलिए हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम न स्वयं वृक्ष काटेंगे, न किसी को काटने देंगे, और जीवन में कम से कम कुछ वृक्ष अवश्य लगाएँगे।

निष्कर्ष:

वृक्षारोपण जीवन, स्वास्थ्य और पर्यावरण की रक्षा का सबसे सरल और प्रभावी उपाय है।